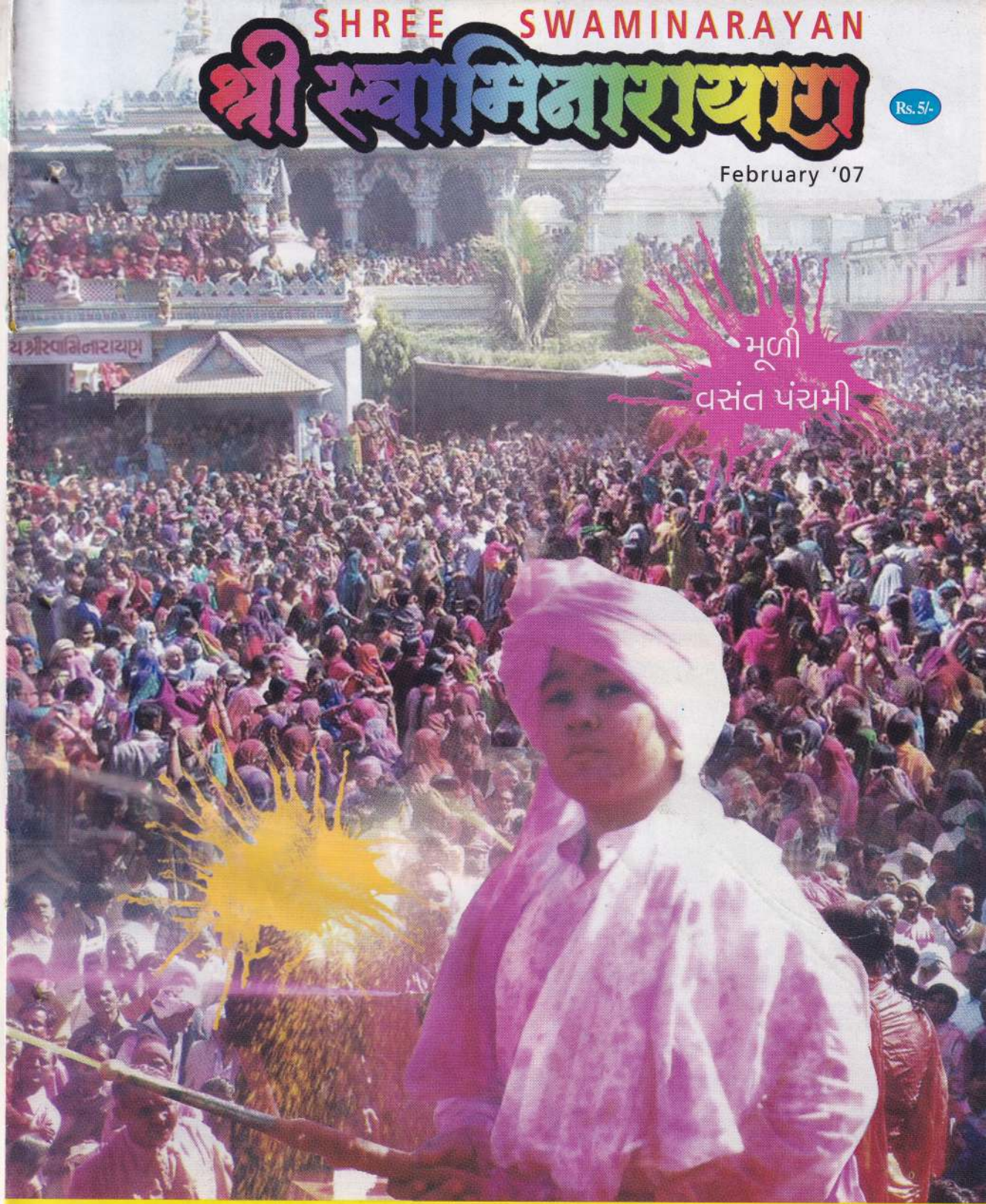
SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

February '07



પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





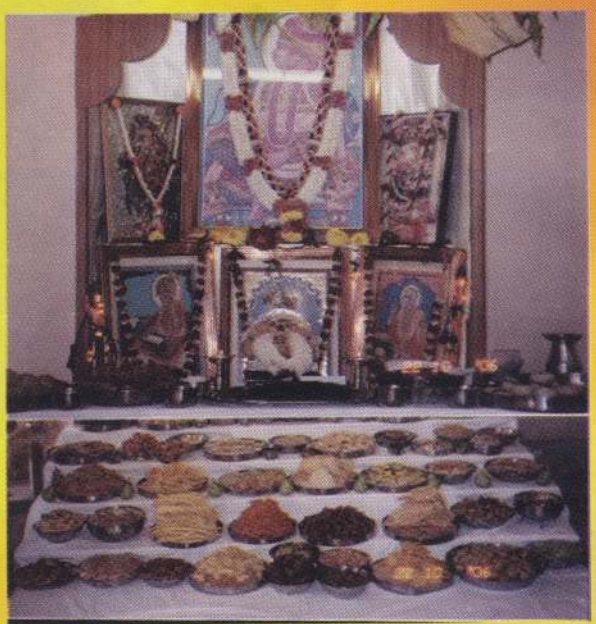
प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" का निर्माण कार्य बडे जोर-शोर से चल रहा है।



शियाण गाँव प्रसादी चरणारविन्द में सोलह चिन्हों का दर्शन करके आनन्द का अनुभव करते हुए प.पू. महाराजश्री।



शियाण गाँव में पू. महाराजश्री के पास सत्संगी बालक कंठी पहनते हुए।



अेन्डोला (झांबिया) मंदिर में अन्नकूट दर्शन।

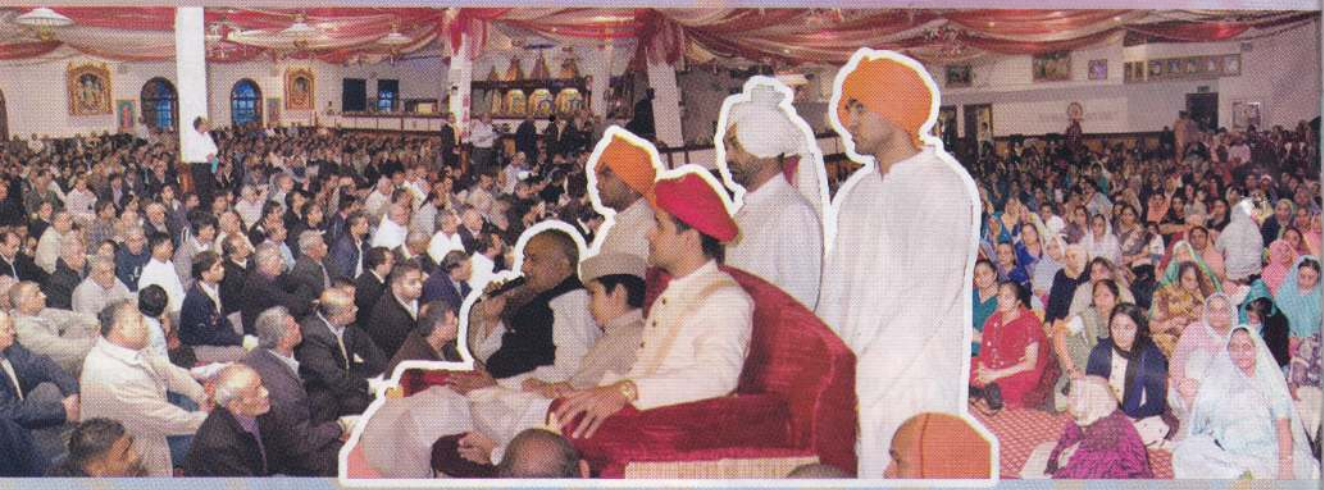
सीडनी अपने मंदिर में श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक दर्शन।



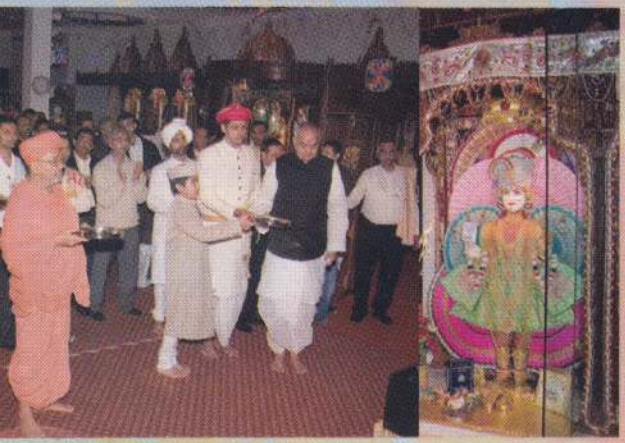


अपने कोलोनिया मंदिर में "सेवा" संस्था की मेडिकल प्रवृत्ति

under postal Regd. No. GUJ. 581 Issued SSP And Valid up to 31-12-08



हेरो लंदन कच्छ सत्संग स्वामिनारायणमंदिर में उत्सव के प्रसंग विशाल सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री साथ में दर्शन देते हुए अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं पू. लालजी महाराजश्री ।



मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की आरती उतारते हुए श्रीहरिके तीनो
पर स्वस्थ के साथ भुज मंदिर के महंत स्वामी ।



हेरो मंदिर में युवक मंडलकी सभा में दर्शन देते हुए
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





हेरो मंदिर में राजमार्ग पर अनुशासित शोभायात्रा में दर्शन देते हुए श्रीहरि के छठ्ठे, सातवे, आठवें वंशज ।

Praful Kharsani

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ६ फरवरी -२००७



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद	५
४.	श्री धर्मवंशी आचार्यकी महिमा	७
५.	अहमदाबाद के परम्परा की गौरवयात्रा	८
६.	टोपीवाले को सत्संग का गुण	१०
७.	सर्वोपरि श्रीहरि के स्वरुप में दृढ निश्चय	१२
८.	श्रीजी स्वयं नरनारायणदेव	१३
९.	सत्संग सुरभि : बाद में बालम विहार आये	१४
१०.	विविधतावाले वेद	१५
११.	सत्संग बालवाटिका (१) तिजोरी खोलने की चाभी (२) एकाग्रता विना पूजा कैसी ?	१६
१२.	भक्तिसुधा (१) चलो हम भी मूली चले (२) लेकिन आप कब पधारे (३) अति दयालु स्वभाव है स्वामी का (४) श्रीहरि का लीला चरित्र	१८
१३.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९१२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

आत्मा एवं परमात्मा का संबंध हमेंशा कुछ लेने देने के अर्थ में होता है । जिसे जागतिक स्वार्थ कह सकते हैं । जीव हमेंशा प्रार्थना करता रहता है कि हे प्रभु मैं आपकी धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करुँगा, प्रणाम करुँगा, जप करुँगा, तप करुँगा, उपवास करुँगा, इन सभी क्रियाओं से मैं आपको प्रसन्न करुँगा । लेकिन इसके बदले में सुख-सम्पत्ति-धन, वैभव, पुत्र, स्त्री या मोक्ष की अभिलाषा रखता है ।

त्याग-वैराग्यवान हो, या वन में रहकर तप करने वाला हो, या आत्मसमर्पित कोई भक्त हो, भगवान से कुछ आशा तो रखता ही है कि हे प्रभु मैं आपका दास हूँ आप मुझे अपने धाम में रखियेगा । इन सभी विधि क्रियाओं में परमात्मा तो दयालु है । फिर भी मनुष्य की बुद्धि से विचार करें तो ? विचार करता होगा ? उसे क्या ? क्या इस तरह दासों की कमी होगी ? तो क्या ऐसे कितने दासों की जरुरत होगी ? परमेश्वर को भक्तों या दासों की कहाँ कमी है । असंख्य करोडो ब्रह्मांड जिसके रोम-रोम में पतंग की तरह उडते रहते है, ऐसे उस परमेश्वर को एक साधारण जीव की दासता या उस जीव द्वारा किये गये उत्सर्ग की आवश्यकता है क्या ? फिर भी भक्तों के अल्पबुद्धिद्वारा होने वाली प्रार्थना या भक्ति या उपासना को स्वीकार करके अपनी दयालुता के कारण जीव का सदैव हित ही करते रहतें हैं । इसलिये ऐसे परमदयालु शरणागत वत्सल परमेश्वर परमात्मा परब्रह्म भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप में दृढ आश्रय लेकर अपने जीवन को धन्य करलेना चाहिए ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जनवरी-२००७

५. ईश्वरपुरा श्री स्वामिनारायणमंदिर में पदार्पण ।

६. धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न .
श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में धनुर्मास की धुनि में पदार्पण ।

७. श्री स्वामिनारायणंमादिर बालवा में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
नवा वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पदार्पण ।
श्री हितेशभाई प्रवीणभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, कांकरिया ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा - शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

९. कलोल श्री विश्वमंगल गुरुकुल में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२३) में सत्संग सभा के प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा कडी में धुनि प्रसंग पर पदार्पण ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर काणोतर (धोलकादेश) प्रसादी के स्थल पर छत्र-चरणारविंद की पूजा-आरती, एवं शियाड (धोलका देश) गाँव में शाकोत्सव पर पदार्पण ।

१३. श्री अशोकभाई अमृतलाल वडगांव में यहाँ पदार्पण - जजीस बंगला, वस्त्रापुर ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर इन्द्रपुरा (माणसा) में पदार्पण ।

१५. श्री प्रविणभाई हरमानभाई बारोड के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया ।
श्री चेतनभाई कनुभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, जीवराजपार्क ।

१६. श्री नारायणभाई मोतीभाई पटेल भाई के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया ।
श्रीनागजीभाई प्रेमजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण (विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने) बापूनगर ।
श्री नरसिंहभाई छगनभाई गोहिल के यहाँ पदार्पण, निकोल ।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा (माणसा) में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. डांगरवा (तलपद-पाटीदार) डांगरवा से मूली श्री राधाकृष्णदेव के दर्शनार्थ आयोजित पदयात्रियों को दर्शन देने हेतु पधारे ।

१९. वसई (डाभला) श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२२. कलोल गाँव में श्री दिलीपभाई नटुभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

श्री जगदीशभाई जटाशंकरभाई शाह (सेमी ट्रोनिकवाला) के पुत्र के विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, वासणा ।

२३. मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव-अभिषेक एवं रंगोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।

२४. गवाडा (विजापुर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण ।

२५. श्री देवर्षि भरतभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण - सोला गाँव ।
श्री प्रज्ञेश बाबूभाई पटेल के लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, मेमनगर ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर वडथल (ता. महुधा) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२६. श्री स्वामिनारायणमंदिर एप्रोच बापूनगर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण श्री कनुभाई बाबुलाल पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, राजपथ क्लब ।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर वासना, (नूतन शिखरी मंदिर) में मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) श्री बापूभाई पटेल द्वारा आयोजित पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर - वासणा में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने हाथों से वेद विधि पुरस्सर धूमधाम के साथ सम्पन्न किये ।

सत्संगी मात्र को दान भेंट नियमित भरने के संदर्भ में

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने सप्रदाय को अमूल्य ग्रन्थ शिक्षापत्री श्लो. १४७ के अनुसार आज्ञा की है कि प्रत्येक आश्रित जन अपने आवक का दशवां भाग या जो कमजोर हों वे हरिभक्त वीसवां भाग दान भेंट निकाल कर अपने जीवन का व्यवहार करें । जो हरिभक्त जिस देश में रहते हों वे उसी देश के मंदिर में दान भेंट को देकर रसीद प्राप्त करले, इसके साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लिखा कर भेंट के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की कोठार ओफिस में भर कर पहुंच अवश्य प्राप्त करले ।

विशेष सूचना : श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार प्रत्येक हरिभक्त दान भेंट की धनराशी अन्यत्र किसी भी संस्था में न दे, इसका ध्यान रखें ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम का थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद

- गोरधनभाई सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मासिक में क्रमशः इष्टदेव सर्वावतारी भगवानश्री स्वामिनारायण के प्रसादी के स्थलों को लिखने का प्रयास कर रहा हूँ । स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी पर ४९ वर्ष २ महीने १ दिन शरीर से रहे । इतने समय में श्रीहरिने संपूर्ण भारत में इतनाविचरण किया कि पूर्णस्प से लिखाजाना सम्भव नहीं है । सागर के पानी में से एक अंजलि भरकर आचमन कर लिया जाय तो सागर पीलिये इस न्याय से यहाँ आचमन करने का प्रयास किया जा रहा है ।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति पुस्त्रोत्तम नारायण का चरणारविंद जिस भूमि पर पड़ा हो, जिस स्थल का वे स्पर्श किये हो, उस भूमि एवं स्थल का कोई बडा भाग्यशाली ही वर्णन कर सकता है । क्योंकि जिस के एक रोम मेंकोटि कोटि ब्रह्मांड हो ऐसे अक्षराधिपति श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी स्थळ का वर्णन कठिन है ।

हम भाग्यशाली है कि हमें विना प्रयास के इन प्रसादी स्थळों का दर्शन एवं सेवन का लाभ मिल रहा है, अन्यथा इन प्रसादी स्थलों की रजकण शिवजी, ब्रह्माजी, जैसे बड़े देवता भी अपने मस्तक पर चढाते हैं। ग.प्र. ३ वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि भगवान जिस अवतार को धारण करते हैं, जिन स्थानों पर लीला करते हैं, उन स्वस्प का एवं उन स्थलों का ध्यान करने मात्र से भगवान के धाम की प्राप्ति होती है ।

निष्कुलानंद काव्य के पुस्त्रोत्तम प्रकाश में स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी ने स्वयं श्रीहरि के प्रसादी के स्थलों का वर्णन करते हुए कहा है कि -

पवित्र छे स्पर्शे करी, आ पृथ्वी साक्षात् ।
ज्यां ज्यां अमे विचर्या,
वणी रह्या जे जे गाम ।
ते जस्र जन जाणसो,
सरवे थया छे स्वधाम ॥
तियां प्राणी कोई तन तजे,
जाण्या विना एर जाग्य ।
कह्यां न जाय वणी कोई थी,
एवा उघडिया एनी भाग्य ॥
चरणे अंकित जे अवनि,
वणी पदनी स्पर्शेल रज ।
जे जोतां न जडे जाणजो,
जेने इच्छे छे ईश्वर अज ॥
पद रजना स्पर्श प्रतापे रे,
जन अभय थाय छे आवे रे ॥
भव भय हरणी ए रज रे,
थाय निर्भय एमा शुं आश्चर्यज रे ।
जन भुवमां ज्यां ज्यां गया रे,
तिया दिन रजनी जे रह्या रे ॥
सह भूमिकानां भाग्य भारी रे,
थई धाम स्प सुखकारी रे ।
एह पृथ्वी पर तजे प्राण रे,
ते तो पामे पद निरवाण रे ॥
वणी नदी नद ने तलाव रे,
सिंधु कुंड कुवा वणी वाळ रे ॥
तियां जियां जियां अमे नाया रे,
स्परशुं पाणी जे अमारी काया रे ॥
तेह स्पर्शनुं देह पाणी रे,
जन उद्धारण लियो जाणी रे ।
तेह तटे तजे कोई तन रे,
पामे अमृत धामे सदन रे ॥
एम कल्याण ना जे उपाय रे,
बहु कर्या छे आजगमांय रे ।
बाग बगीचा ने फुलवाडी रे,
वृक्ष वेली वन वणी जाडी रे ।
एह आदर्दि जायगा अपार रे,
जीयां रहया अमे करी प्यार रे ।
ए तो स्थानक छे तीर्थस्प रे,
अति पवित्र जाणों अनूप रे ॥
एह स्थाने मुके कोई देह रे,
पामे अक्षरधाम ने तेह रे ॥
एम अनेक प्रकारे आज रे,
कर्या उपाय कल्याण काज रे ।
सर्वेतीर्थ ना तीर्थ कहिए रे,
जियां संत अमे नाय छेए रे ॥
तियां जन कोई जई नाशे रे,
थई पावन धाम मां जाशे रे ।
एहजल मां जंतुज रे छे रे,
धन्य भाग्य संतना के छे रे ॥
एह पर अंडज उडिजाशे रे,
तेह परम पावन थासे रे ।
अवधि आव्या समेतन त्यागी रे,
जाशे स्वधाममांई सुभागी रे ॥
सर्वेधामना धाम एथियारे,
रह्यां संत सहित अमे जिया रे ।
बीजा तीर्थधाम बहु कावे रे,
पण अमे रह्या ते तुल्य नावे रे ॥

कांजे पाम्या अमारो प्रसंग रे,
तेने तुल्य आवे केम मांग रे ।
एने स्पर्श्या ता वामन पावे रे,
वात तेनी तो जाणजो न्यारी रे ॥
जाओ पुरुषोत्तमनो स्पर्श रे,
ते तो सहु थकी छे जो सरस रे ।
सर्वे धामनो जे कोई धामी रे,
ते तो अमे नारायण स्वामी रे ॥
वात आजनी छे अति मोटी रे,
जेथी जीव तर्या कोटि कोटि रे ।
चराचर स्थावर ने जंगम रे,
ते सहुने थयुंछे सुगम रे ॥
सहु चाल्याजाय छे स्वधाम रे,
नथी पडतुं कोईनुं काम रे ।
एम वेति करी छे अमे वाट रे,
ब्रह्म मोल मां जावाने माट रे ॥
श्रीमुखे कहे एम श्रीहरि रे,
सहु वात मानजो ए खरि रे ॥

श्रीहरिने अपने मुख से कहा है कि मैं सभी अवतारो का अवतारी हूँ । सभी धाम का धामी हूँ । इसलिए हमारी प्रासदी के स्थल सारे जगत से न्यारे हैं । हमारे चरण रज की चाहना ब्रह्मादिक देव भी करते रहते हैं । हमारे प्रसादी के स्थल की वस्तु का स्पर्श करके जोशरीर छोडता है वह मेरे धाम में जाता है ।

देश विदेश में फैला हुआ स्वामिनारायण सम्प्रदाय सभी से श्रेष्ठ है । इसके साथ ही अहमदाबाद (गुजरात की राजधानी) में कालुपुर विस्तार में भगवानने अपने स्वस्पको जहाँ स्थापित किया वह विश्व का सबसे पहला मंदिर है । प्रति वर्ष हजारों पर्यटक अहमदाबाद का पर्यटन करने आते है वे कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर का अवश्य दर्शन करते हैं । इस मंदिर की कलाकृति प्राचीन एवं अलौकिक है । इसका दर्शन करके सभी धन्यता का अनुभव करते हैं । विशाल भवन, विशाल प्रांगण, इमारत की भव्यता, विशाल सभा मंडप स्थापत्य कला का दर्शन करके सभी दिग्मूढ हो जाते हैं । अहमदाबाद में ही नही गुजरात की ऐतिहासिक यह धरोहर है । नूतन वर्ष के आरम्भ में भव्य उत्सव (अन्नकूटोत्सव) मनाया जाया है, जिसका दर्शन करने गांवो से बहुतायत में लोग आते हैं। असंख्य हरिभक्त प्रतिदिन नियमित प्रातः मंगलार्ती से शयनार्ती तक दर्शन का ताता लगाये रहते है । धर्मिकपर्वो का उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है । एकादशी-पूनम तो प्रतिमहिने मनाई जाती है । कवि सम्राट न्हानालाल ने लिखा है कि - "अमारा पितृगृह नी न्हानी सरखी अगाशीमांथी ध्रुव दिशामां निरखता पाण बांध्यु एकचोरकंड अंतरिक्षनुं सरोवर जाणे देखाय छे" ? स्वामिनारायण मंदिर की हवेली के बीच से दिखाई देता जो अवकाश है वह मानो आकाश गंगा है । इत्यादि विशेषणों की भरमार उनके शब्दोंमें है ।

स्वामिनारायण भगवान लोक कल्याण के लिये बड़े-बड़े मंदिर को बनवाये । अहमदाबाद का मंदिर सहजानंद स्वामी का जीवंत स्मारक है । मानो अक्षरधाम साक्षात् पृथ्वी पर नीचे आ गया है । इस प्रकार की अनुभूति प्रत्येक जीवमात्र को होती है । अहमदाबाद का मंदिर सम्पूर्ण प्रसादी का है । श्रीहरि के चरण रजसे अहमदाबाद का मंदिर ही नही बल्कि सम्पूर्ण अहमदाबाद पावन हुआ है ।

(क्रमशः)

आचार्यश्री पंथ बतावे - कीर्तन

"ओ आचार्यश्री ! पंथ बतावो,
हुं शरण तमारे आव्यो छुं
भवसागरमां भूलो पडियो,
हुं शरण तमारे आव्यो छुं.... ओ आचार्य
मध दरिये मारी नैया,
हालक-डोलक थाय छे,
आप बिना मने कोण उगारे ?
हुं शरण तमारे आव्यो छुं.... ओ आचार्य
सेवा समरणशी रीते करवां
तेनु मुजने ज्ञान नथी,
आप विना रस्तो कोण बतावे ?
हुं शरण तमारे आव्यो छु.... ओ आचार्य
टूंकोने टच रस्तो बतावी,
सीधो मार्ग चढावी द्यो,
जन्म मरणजो फेरो मिटावो,
हुं शरण तमारे आव्यो छु.... ओ आचार्य
गुरु विना तो ज्ञान न आवे,
बूडतानी गुरु बांटा ग्रहो,
हुं शरण तमारे आव्यो छुं.... ओ आचार्य

- प्रो. महादेव धोरीयाणी

श्री धर्मवंशी आचार्यकी महिमा

संकलन : पराग दवे (शिकागो)

श्री भक्तचिंतामणी

प्रकरण १६० श्रीजी महाराज का अंतिम उपदेश वणी

धर्मवंशी द्विज धीर रे, अवध प्रसादने रघुवीर रे ॥४७॥
एह दत्तपुत्र छे अमारा रे, तेने कर्या गुर तमारा रे ।
तेने मानज्यो तमे सुजाण रे, रहेज्यो शिक्षापत्री प्रमाणे रे ॥४८॥

देश विभाग का लेख

श्रीधर्मवंश की दोनो गादीवाला की आज्ञा में सत्संगी बहन भी जिस प्रकार आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में सत्संगी एवं त्यागी संत रहे वैसे ही उन्हें रहना चाहिए यही हमारी आज्ञा हैं, इसी में सभी का कल्याण है । इसमें जो भेद समझेंगे तथा दूसरे को मान देंगे तो इसलोक में एवं परलोक में कभी सुखी नहीं होंगे ।

प.पू. श्री गोपालानंदकी बात

प्रकरण-३

आचार्य महाराजश्री को आज अपना दत्तकपुत्र बनाकर सभी साधु सत्संगी का गुरु बनाकर अपनी गद्दी पर बैठाया है । इनमें भी अपनी दैवत्व शक्ति प्रदान किये हैं । इसलिये आचार्य महाराजश्री को पुरुषोत्तम भगवान का अवतार समझना ।

आचार्य महाराज को जो भी भेंट दी जाय वह हम स्वीकार करते है कुछ लोग ऐसे भी होते है जो आचार्यकी कमी बताकर संतो का महत्व बताते हैं तथा उन्हीं की सेवा करने की बात कहकर गलत मार्ग पर लेजाते हैं । ऐसा करने वाले को पंच महापाप जैसा लगेगा । जो इस रहस्य को समझेंगे उन्हीं को संप्रदाय का यथार्थ ज्ञान है ऐसा समझना चाहिए । जो इस यथार्थता को नहीं समझेंगे उनका मोक्ष बिगडेगा (वात नं. ९)

श्रीहरिचरित्र

(परिच्छेद ४ अध्याय ११)

आप सभी मेरे आश्रितजन धर्मवंशी इन दोनो पुत्रों को धर्मदेव की तरह मानना एवं अन्न, वस्त्र, आभूषण, धन आदि देकरउनका सम्मान करना है । ३३. हे भक्तों इन दोनो आचार्यो या उनके स्थान पर स्थित वंशजो का जो आश्रय करेंगे, उनको अंत समय में अपने धाममें लेजाऊँगा । ३३. यह सब अपने बाहुबल से सम्पादन मैने किया है । यह सभी सम्पत्ति हमें जिसे दिने की इच्छा होगी उसी को दूंगा ॥

श्रीहरिलीला कल्पतरु -

स्कंध - १०

इसलिये सभी सत्संगी आचार्यश्री को मेरे जैसामाना । जो लोग इन आचार्यों का आश्रय करके धर्माचरण करेंगे एवं भजन करेंगे उन्हें मैं अभीष्ट फल दूंगा । हमारे आश्रित त्यागी एवं गृहस्थ हमारी आज्ञा में जैसे वर्तन करते है वैसे ही आचार्य की आज्ञा में वर्तन करना (अ. ४)

हे भक्तजन ! इन दोनो आचार्यो द्वारा जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा की जाय उसी में मेरा निवास होगा । ये अयोध्याप्रसाद एवं रघुवीरप्रसाद दोनो आप के गुरुहैं । इसलिये आदरपूर्वक सम्मान करना मानव बुद्धि मत रखना ।

श्रीहरिलीलामृतम्

कलश - विश्राम - ४६

चौपाई

एने प्रेमथी पूजशो तमे, जूमा मानी लेशुं ते तो अमें ।
संत हरिजनना समुदाय एनी आज्ञामां रहजो सदाय ।

विश्राम - ४७ सत्संगियों को श्रीहरिजीका उपदेश -

शिखरिणी छन्द -

कहे श्रीजी स्वामी मुनिजन अकामी सहु सुणों
सुपुत्रो बे मारा तनमन तमारा गुरुणो ।
सदा एनी आज्ञा सुनि सुनि सुखेथी अनुसरो,
कदी तेनी साते वचन थी विवाद नव करो ॥५॥

उपजाती

सत्संगी सर्वे सुनजो अमारा आचार्य आ एज गुरुतमारा ॥५९॥
कुटुम्ब माही जनजेह होय ते बालके वृद्ध जुवान कोय,
प्रत्येक नामे गणीं आठ आना देजो गुरुने प्रतिवरष दाना ॥६०॥

पुरुषोत्तम प्रकाशः

प्रकार -३७ (श्रीहरिजी के मुख से)

चौपाई

वणी पधारवसे पोताने घेर रे, करशे सेवा वणी सारे पेर रे ।
वणी करसे समनमान एनु रे, मारे करवुं छे कल्याण तेनुं रे ॥
एम आचारजथी कल्याण रे थाशे सहु जीवननुं सुजाण रे ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

अहमदाबाद के परम्परा की गौरवयात्रा

श्रीहरिचरण अनुसरण उत्सव

- जी. एम. हीरागर एम.ए. पूर्व माहिती एवं प्रकाशन अधिकारी, अहमदाबाद म्यु. कोर्पोरेशन

भगवान श्रीकृष्णने श्रीमद् भागवत गीता में लिखा है कि "संभवामि युगे युगे" इस वचन को चरितार्थ करने के लिये इ.स. १७८१ सम्वत् १८३७ चैत्र शुक्ल नवमी (रामनवमी) के दिन अयोध्या के पास गोंडा जिले के छपैया गाँव में धर्मपिता एवं भक्तिमाता से अवतार लेकर प्रगट हुए । इ.स. १८३० सम्वत् १८८६ ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन अपनी मनुष्य लीला पूर्ण करके अर्धशतक पूर्ण भारतवर्ष के इतिहास में चक्रवर्ती अलौकिक घटना है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा "श्रीमद् भागवत में" आसुरी संपत्त एवं अधर्म का नाश करने के लिये, सत्पुस्त्रों एवं धर्म की रक्षा के लिए मैं दूसरा अवतार धारण करुँगा इस संकल्प को श्री सहजानंद स्वामीने पूर्ण किया । इस इतिहासका अहमदाबाद के लिये विशेष महत्व है । इस में कारण यह है कि अपने अवतारी कर्म को पूर्ण करने के लिये अमहादाबद में २६ बार पधारे थे । इस समय में इन्होंने अपने सत्संगीजनो को आत्मप्रेम से सन्तुष्ट किये थे।

श्री सहजानंद स्वामी इ.स. १७९९ सम्वंत १८५५ के समय में वनविचरण के बाद नीलकंठवर्णी के स्प में तप करके प्रथमवार अहमदाबाद में आये । अनेक खिले कमलों से सुशोभित, छायादार वृक्षों से आच्छादित कांकरिया तालाबमें स्नान एवं नित्य विधि करके नगीना वाडी में विश्राम करने के बाद आगे चले थे। गुजरात में धर्मप्रचार के लिये इ.स. १८२२ सम्वत १८७८ तक परिभ्रमण करते हुए २६ बार अहमदाबाद आये थे । जिससे अहमदाबाद के लिये अधिक प्रेम होता परिणाम स्वस्प असंख्य लोग आत्मीय सूत्रों से बधते गये ।

अहमदाबाद को भगवान श्री स्वामिनरायाण की कर्म भूमि एवं धर्मभूमि कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । भूमानंद स्वमी ने लिखा है कि -

शंख चक्र गदा पद्म रे,
हरिकृष्ण लखी निजनाम ।
साबरमती तीरे सोहामणु रे,
श्रीनगर कर्युं निजधाम
छाप आपी अवधप्रसादने रे ॥

इस शहर में श्रीहरिने कांकरिया तलाब, चंडोला तालाब, साबरमती का नारायणघाट, भीमनाथ, कोटेश्वर, दूधेश्वर, सप्तर्षि के किनारे स्नान करके विश्रान्ति का आनंद लिया है । हाटकेश्वर महादेव - खाडिया, श्वेतकृष्ण मंदिर भद्र, रामजी मंदिर-कालुपुर, नीलकंठ महादेव असारवा, कोटेश्वर महादेव, मोटेरा, जैसे धर्मस्थलों का तीर्थाटन किया है । माणकी घोडी पर सवार होकर जमालपुर, रायपुर, दरियापुर, खानपुर, आस्टोडिया दरवाजा से प्रवेश करके शहर के अलग-अलग स्थानो पर हरिभक्तों के घर पदार्पण करके दर्शन का लाभ दिये थे । इस नगर के अपने मंदिर में जन्माष्टमी, होली, रंगपंचमी, फूलदोलोत्सव के नाना विध रंगोत्सव मनाये थे । इस शहर की अहोभाग्य है कि यहाँ के रहनेवाले श्रेष्ठिजन हो या सामान्यजन रहें हो सभी को समान प्रेम मिला है ।

श्रीहरिने अपने तीन संकल्पो में मंदिर निर्माण का प्रारम्भ अहमदाबाद से प्रारम्भ किया । कालुपुर का निर्मित मंदिर विश्व का सर्व प्रथम मंदिर श्रीहरिकृष्ण के साथ श्री नरनारायणदेव की मूर्तियों की प्रतिष्ठा इ.स. १८२२ सम्वत १८७८ फाल्गुन शुक्ल तृतीया के दिन श्रीहरिने अपने हाथों से की थी । इस संकल्प को पूर्ण करने के लिये उन्होंने देश-विदेश से आनेवाले भक्तों को कोई अव्यवस्था न हो इसका खूब ध्यान रखा था । जिससे प्रसंग प्रारंभ होने से पूर्व गढपुर के ६० घुडसवारो के साथ निरीक्षण हेतु जमालपुर दरवाजे से शहर में प्रवेश किये । श्वेत वस्त्र धारण किये हुए श्रीहरि मांडवी की पोल में से माणेकचोक से उत्तरकी दिशा में होकर दिल्ली दरवाजा होते हुए भी साबरमती के किनारे शाहीबाग के सभी स्थलों का निरीक्षण किया ।

उस समय का अंग्रेज कलेक्टर डनलोप शाहीबाग में रहता था । उसने

शाहीबाग में स्कने के लिये कहा । उन्होंने उसके सत्कार का सम्मान करके पुन: कोट विस्तार से होते हुए कांकरिया आये । सम्पूर्ण शहर की परिक्रमा करके तालाब के किनारे वृक्ष के नीचे थोडा आराम करने के बाद जेतपुर के लिये प्रस्थान किर दिये ।

१८५ वर्ष पूर्व भगवान श्री स्वामिनरायण कालुपुर स्वनिर्मित मंदिर में प्रतिष्ठा करने के लिए इ.स. १८२२ स. १८७८ माघ वद द्वादशी के दिन अहमदाबाद में बडे धूमधाम के साथ प्रवेश किये । इस दिन जेतलपुर से अपने संघ को साथ लेकर कांकरिया पडाव डाले बाद में श्रीहरि रायपुर दरवाजा आकर खड़े रहे । वहाँ से निकली हुइ रथयात्रा का वर्णन स.गु.शा. घनश्याम स्वस्मदासजीने "अहमदाबाद में भगवान स्वामिनारायण" पुस्तक में वर्णन किया है ।

शहर के हरिभक्त एवं नगर के अग्रगण्य नागरिक ढोल, मंजीरा, नगारा एवं नाना विध वाद्ययंत्रो के साथ संमिलित हुए साथ में संत-ब्रह्मचारी इत्यादी सामने जाकर श्रीहरि का सम्मान किये । बाद में वही से रथयात्रा आगे चली ।

श्रीजी माणकी घोडी पर विराजमान थे । माणकी घोडी नाना विध से अलंकृत थी । जिसपर भगवान श्री स्वामिनारायण सुनहरी कलकी पगडी बांधे विराजमान थे, उनकी शोभा पूर्णिमा के चन्द्र जैसी निखर रही थी।

इस शोभाका दर्शन करने नगर के गलियो में नर-नारी सभी उमड़ पडे थे । भाव से सभी अटारी पर चढकर महिलायें भी दर्शन कर रही थी । नगर को चत्वरो को, गलियों को नाना प्रकार के बन्दनवारों से सजादिया गया था । इस प्रकार अनेको प्रकार से रथयात्रा-उत्सव में सभी अगल-अलग साज सज्जा के साथ चल रहे थे । सबारियों के पीछे भक्तजन, उनसे पीछे संतजन, उनके पीछे वर्णी चल रहे थे । सभी उच्चस्वर में कीर्तन गाते चल रहे थे । संस्कृत पढे संत संस्कृत बोलते चल रहे थे । उनसे पीछे बन्दूक धारी पार्षद चल रहे थे । जय-जयकार करनेवाले सेवक सुवर्णवेष्टित छली लेकर चल रहे थे इनके पीछे श्रीहरि माणकी घोडी उपर सवार होकर चल रहे थे । उनके पीछे नर-नारीयों का झुन्ड गीत गाते चल रहा था । नगर के नरनारी अपने प्रसादों से फूलों की वर्षा कर रही थी ।

रायपुर दरवाजे पर श्रीहरि का स्वागत करने के लिए कलेक्टर डनलोप अपनी पत्नी के साथ घोडा गाडी में आया था । रायपुर मे नागरोनी भी स्वागत किया । माणेक चोक पार करके रतनपोल नगर शेठ हिमाशानी हवेली के पास श्रीहरि जब आये तब वहाँ की महिलायें बाहर आकर दर्शन कीं । नगरशेठ की माताने श्रीहरि को सोने का हार अर्पण किया । उससे आगे आकर नवा वास के पास श्रीहरि घोड़ी से नीचे उतरे ।

श्रीहरिका दिव्य दर्शन की यह गौरवपूर्ण ऐतिहासिक शोभायात्रा का स्मरण ताजा करने के लिये अहमदाबाद म्यु. कोर्पोरेशन हेरिटेज एडवाजिट श्री देवाशिष नायक की प्रेरणा से एवंआयोजन की सहायता से श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से ता. १८-२-०७ की सुबह में ६-०० बजे रायपुर से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ भव्य शोभायात्रा-नगरयात्रा का आयोजन किया गया । उस समय श्रीहरि की प्राचीन लीला के अनुकृति स्म इस रथायात्रा में बाजे गाजे एवं हर्षोल्लास के साथ सहयोगी बने । इस धर्मधाम का अवसर न चूकें । यह धर्मयात्रा सभी के लिये सुखदायी बनेगी क्योंकि इसमें श्रीहरि का ही अनुकरण होनेवाला है । हम सभी स्वस्म का स्मरण करके इस धर्मयात्रा में अवश्य भागलें ।

रंगोत्सव

श्री नरनारायणदेव की जन्म जयंती फाल्गुन वद-१ ता. ५-३-७ सोमवार को मंदिर के प्रांगण में पूज्य आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराज के साथ रंगोत्सव मनाने हेतु समग्र सत्संग को आमंत्रण प्रदान किया जाता है ।

टोपीवाले को सत्संग का गुण

- गोरधनभाई सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

आप उन्हें हमारे पास लाइये यदि पराई स्त्री को माता कहते हैं तो हम उन्हें मर्द कहेंगे । स्वामी के शिष्य संत होते हुए भी परस्त्री को माता के समान मानते थे । पट्टीदारो के मुह पर श्याही गिरी थी । स्थान मिलते है जमीन में चले जाने का मन होता था । साहब ने कहा कि परस्त्री का गुलाम हुआ गुरु एवं शिष्य ही स्वामी की निन्दा करते हैं । यथार्थ में मर्द स्वामी ही है जो घोर कलिकाल में सद्धर्म पर चल रहे है । मतपंथी अधर्मी हुए उस समय उज्ज्वल धर्म चलाये थे जो सूर्य स्म है । जिसे उलूक दिवान्ध जैसेनहीं देख सकते है । विवेकी लोग स्वामी का शुद्ध मत देखकर अंगीकार किये । विना कहे स्वामी का जीवन उत्तम था । उनके जैसे सत्पुस्मो की निंदा हो तो सत्पुस्मो की कीर्ति बढती है । निंदा करने वाले का यशघट जाता है । राम भगवान का सत्कार करके हनुमानजी वानर होते हुए भी पूज्य हुए, लेकिन द्रोह करने के कारण रावण पुलस्त्य का पौत्र होते हुए भी अपकीर्ति को प्राप्त किया । संसार में स्त्री-पुस्म कामन एक दूसरे के लिए ओतप्रोत रहता है । इसीलिये उच्च कुल की होती हुई भी मर्यादा नष्ट होने से पवन या श्वपच के घर रहती है । उसकी आप निंदा करते हो । आपके गुरुरंडीबाज है । मदार में आम्र की बुद्धि करने से आम्ररस मिलने वाला नहीं है । हम स्वामी के शिष्य नहीं है फिर भी अपनी बुद्धि के अनुसार कहते हैं । आपकी पत्नी आपको अपने जूती के समान समझती है । फिर भी आप स्वामी को खराब बोलते हैं । मनुष्य को मारनेवाला महानपापी होता है। फिरभी कोई मनुष्य का खून करे तो यथार्थ विचार करके दंड देते है । दुर्लभ में दुर्लभ मनुष्य शरीर है । श्रीहरि कहते कि जो इस बात को समझता है वह महान बुद्धि शाली है । सत्संग को पकडकरखोगे तो घोर पाप से छूट जाओगे । ऐसा कहकर श्रीहरि चलने लगे । श्रीहरि कहते हैं कि राजा कुछ ऐसे होते है जो स्वार्थ के कारण दुष्टो को सजा नहीं देते । टोपीवाले जैसा कोई राजा नही कि जो अन्यायी को पकडे बिना रहसके । राजाओं का सम्पूर्ण गुण टोपीवालो के ऊपर होता है । वह धन के परवाह किये विना राजा हो या गुरुसभी को यथोचित दंड देता है ।

एक समय श्रीहरि वसई के हरिभक्तों को दर्शन देने के बाद साबरमती में स्नान करके अश्व पर सवार हुए, उनके साथ एकसो अन्य घोड़ेसवार थे । उस समय टोपीवाला सरदार ने श्रीहरि को देखा, उसके मनमें आनंद की सीमा नही रही । वह सामने आकर कहने लगा कि हम आपके समान ही आपके संतो को मानते हैं । आपकी रीति, आपक ानियम बहुत उत्तम है । जो उत्तम पुस्म का सन्मान करता है, उसका सन्मान सम्पूर्ण पृथ्वी पर होता है । जब तक राज्य की व्यवस्था नीति पूर्वक रहेगी तब तक हमारे राज्य की समद्धि रहेगी । आप जैसे महापुस्म का जब अपमान होगा तभी से अन्य का पतन होगा । जो व्यक्ति कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर संकल्प करे उसका सर्वविध कल्याण होता है । बडे टोपीवाले के साथ इस तरह वात करके श्रीहरि वहाँ से धोलका गये ।

श्रीहरि कहते है कि उस राजा की शासन व्यवस्था ईश्वरीय इच्छा के अनुसार चलती है । जिससे दिन प्रतिदिन राज्यवृद्धि होगी । एक समय बाबा लोग अंग्रेजो के सामने ऐसी वात की कि हमलोगों के सिवाय अन्य साधु पशु के समान है । उस समय अंग्रेज ने कहा कि - हम प्रत्यक्ष देखने के बाद ही निश्चित करते हैं । यहाँ लोग विना विचारे काम करते हैं । दृष्टि से ओझल साहब की डर के विना जो लोग कार्य करते है, उसकी जानकारी साहब को हो जाती है, बाद में उसके प्रति उचित व्यवस्था करते हैं । पाखंड हमसे डरता है । चोर व्यभिचारी, का हम खोज करके नाश करते हैं। ऐसा कहकर वैरागियों को साहबने छोड़ दिया । पुलिस एक पलटन तैयार होकर जहाँ संत सभा किये हुए थे उसके चारो तरफ घिर कर खड़े हो गये । संतो के पास कई अस्त्र, शस्त्र, तम्बाकू, चीलम या नशा की अन्य सामग्री नहीं थी । साधुओं का निर्मल विचार देखकर उनके प्रति प्रेम के भाव हो गये । जबकि वैरागियों ने अस्त्र-शस्त्र-नाशाखोर एक हजार वेशधारी धूर्त यहाँ आये हैं ऐसा कहा था । इसलिये साहब ने कहा, आपलोग कितने हैं ? तब व्यापकानंद स्वामीने कहा हम २०० जितने साधु होंगे । साहब ने कहा इसमें चार लोग मेरे साथ आओ । पंजाब के अखंडानंद मुनि को पूर्व की भाषा आती थी जो साहब को अच्छी लगती थी । स्वामी अपने साथ-निष्कुलानंद मुनि, शतानंद मुनि एवं गुस्चरणानंद मुनि को लेकर गये । साहब मुनियों का तेज देखकर उन्हें बैठने का आसन दिया । बाद में बैरागी संतो को बुलाया । उन्हें आसन नहीं दिया । साहब के सामने खडे रहे । सभी से नाम परिचय एवं गुस्का नाम पूछा । संतोने अपनेगुरुके नाम में सहजानंद स्वामी लिखाया । निष्कामी, निर्लोभी, निष्पृही, निर्मानी इत्यादि शब्दों का अर्थ समझाकर अपने नीति नियमों को सभी संतो ने समझाया । यह सुनकर साहब ने कहा आप सभी का धर्म ही सत्य है । आपके गुरु भी सत्य है । आप सब की जबतक इच्छा हो तब तक जहाँ निवास कर रहे हैं रहियेगा ।

साहब के निवास स्थान से जब संत चले तब साहब ने कहा जब आपके भोजन की व्यवस्था अन्यत्र न हो तो हमारे यहाँ से मंगवालेना । वैरागियों से कहा कि जिन्हे

आपलोग आचारहीन कहते थे, वे तो सच्चे संत है। आपलोगों का आचार अच्छा नहीं है। आपलोगों में एक भी नीति नहीं है। आप में कोई आठ प्रकार से स्त्री का त्याग नहीं करता है। आपके सम्प्रदाय के महंत आकर कहे कि वे पैसा-धन-दौलत इत्यादि नहीं रखते ? आपलोग केवल नाम मात्र के लिये साधु हो। नीति का आपलोग सर्वथा त्याग किये है। नीति ही धर्म का रुप है। धर्म के विना संप्रदाय नाक के विना मनुष्य जैसा है। वैरागीने कहा कलियुग में हरिकीर्तन ही श्रेष्ठ है। साहब ने कहा जानकर किया जानेवाले पाप का नाश नहीं होता। अज्ञान में यदि पाप हो गया होतो हरिकीर्तन से नष्ट हो सकता है। जो अनीति पर चलता है वह जैसे तैसे बोलता भी है। जिसमें धर्म नहीं उस सम्प्रदाय का अस्तित्व ही क्या। जैसे दूध में जहर मिला दिया जाय उसे जो पीये वह मरे विना रह नहीं सकता।

इस प्रकार अतिशय बुद्धिशाली साहब नीति के अनुसार वात करते थे। मूर्ख प्रजा को कभी दण्ड नहीं देते थे। लेकिन जानकर कोई अपराध करता तो भले ही वह अपना बेटा, नौकर हो तो भी उसे दण्ड देते थे। इसीलिये उनका शासन चलता रहा। इधर वैरागी साधु साहब की नीति समझकर चुपचाप चले गये।

कलियुग में उस समय जो उद्धत राजा थे उनका मान मर्दन करने के लिये भगवान स्वामिनारायण ने अंग्रेज शासक को प्रेरणा किये। इस प्रकार भगवानअपने प्रताप को सर्वत्र फलाने लगे थे। उस समय अपने संत प्रजा में सच्चे उपदेश का प्रचार कर रहे थे, उधर अधर्मी पाखण्डी लोग संतो को माने में लगे थे। उस समय ईश्वर की इच्छा से अंग्रेज शासक ने संतो की रक्षा की और अधर्मियों को यथोचित दंड दिया।

एक समय वडताल में उत्सव के अवसर पर महाराज ने अंग्रेज शासक को आमंत्रण भेजा। उस समय अंग्रेज शासक भगवान स्वामिनारायण कानाम सुनते ही आने के लिये हाँ कर दिया। स्वामिनारायण के सभी अनुयायी वचन स्मी कैद में रहते हैं। सभी उत्सव में एकत्रित होते हैं फिरभी किसी प्रकार का व्यसन नहीं होता। सत्संगी के अलांवा अन्य सभी कुत्सित कर्म करते हैं। श्रीहरि कहते अब स्वराज्य आ गया है। इसलिये कलि, अधर्म, अनीति असुरों का बल नहीं चलेगा। अब हम वर्षो तक उत्सव करेंगे।

पृष्ठ ७ से आगे.....

श्री धर्मवंशी आचार्यकी महिमा

मानो मोक्षनो छेल्लो उपाय रे, एह उपरांत नथी कांई रे ॥१५॥

प्रकार - ३८ (श्रीहरिजी के मुख से)

दोहा

धर्मकुल जे अनुसरे त्यागी गृही नर कोई नार।
परिश्रम विना ते पामशे, अपार भवनो पार ॥

प्रकार ३९ (श्रीहरिजीना मुखे)

चोपाई

जेवुं अमारुं कुल मानशे रे तेने तुल्य केम थाशे रे।
माटे विचारो ने वात कीधो रे, घणुं समझी ने गादी दीधी रे॥

प्रकार ४० (श्रीहरिजीना मुखे)

चौपाई

एह कहे तेम सहु करजो रे, पूछ्या विना तो पग भरजो रे।
हाथ जोडी ने रेजो जरुर रे करी डापण पोतानुं दूर रे ॥
एने राजी राखशो जो तमे रे, तो तम पर राजी छीए अमे रे।
एनी राजी राखशे जे जन रे, तेने अमने कर्या परसन रे ॥११॥
कांजे अणारे ठेकाणे ए छे रे, ते तो प्रवीण होय ते प्रीछे रे।
बीजाजन ए मर्म न लहेरे, भोला मनुष्य ने भोलाई रहेरे॥१२॥
अमे एमां ए छे अम मांई रे, एम समझो सहु बाई भाई रे।
एथी अमे अलगा नरै ये रे, एमां रहिने दर्शन दैये रे ॥१४॥
धर्मवंशी आचारज मांय रे, सदा रह्यो छूं मारी इच्छाय रे।
माटे एने पूछे हूँ पूजाणों रे, ते तो जरुर जन मन जाणो रे ॥१७-१८॥

श्रीमद् सत्संगिभूषण

अंश पर, अध्याय १९ (श्रीहरि मुख से)

दोनों देश के आचार्यो में किसी एक आचार्य का जो आश्रय ग्रहण करेंगे उन्हे हम हर प्रकार से सुखी करेंगे और अंत में लेने आयेंगे। इसलिये दोनो देश के त्यागी, स्त्री, पुरुष आचार्य की आज्ञा में रहें। हमारी पूजा से जैसे कल्याण होता है ऐसे ही आचार्य की पूजा से कल्याण होगा।

श्रीमद् सत्संगीजीवनम्

प्रकरण ४, अध्याय ४०

अपने आश्रितों के लिए श्रीजी महाराज ने कहा कि आप सभी दोनो देश के आचार्यो को धर्मदेव की तरह मानना। अन्न, वस्त्र, आभूषण से सेवा करना (३८) जिस देश के आचार्य के आश्रित हों उन्हें हम अक्षरधाम लेजायेंगे ॥ (३९)

शिक्षापत्री

हमारे आश्रित सभी सत्संगी अपने आचार्य के साथ कभी विवाद नहीं करेंगे। अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्न, वस्त्र, आभूषण आदि द्वारा उनकी पूजा करेंगे।

सर्वोपरि श्रीहरि के स्वरुप में दृढ निश्चय

- पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)

श्रीहरि के स्वरुप में निमग्न होकर, श्रीहरि कीआज्ञा में, सूर्योदय से पहले जागकर, मुक्तानंद स्वामी का उपदेश ''ध्यान घर ध्यान घर धर्म ना पुत्र नुं'' जे थकी सर्व संताप नासे, कोटी रविचन्द्र की कांति झांखी करे, एवा तारा उर विषे नाथ भासे । ध्यान ग्रहण करी रोज ''सुखदायक रे स्वामी सहजानंद,

प्रगट पुरुषोत्तम श्रीहरि जेनु स्वामिनारायण नाम छे

जेने भजने रे पामे भवजल पार, प्रकट

इस प्रकार का यथार्थज्ञान अर्थात् प्रगट परब्रह्म परमात्मा श्रीहि धर्मभक्ति के बाल घनश्याम महाराज जो छपैया में अवतार लेकर अगणित जीवों का कल्याण करने के लिये नाना विध बाल चरित्र किये थे । स.गु. भूमानंद स्वामी के शब्दों में भागावत, श्रीराम चरित्रमानस, धर्मशास्त्र आदि जे पवित्र, पुरुषोत्तम करी पीत ।

बे टाणा सुनवा जाय नित्य,
कोई समे निशा पडी जाय,
घेर पधारता मोडुं थाय ।
मोटा भाई ना पाडी कहे छे,
सारा माटे शिखामण दे दे ।
मारी बात सुनो घनश्याम,
तमे मोटुं न करो ए काम ।
निशा समे जावुं नहि तमारे,
कथा सांभळवा कोई वारे ।
एवुं सुनी कहे घनश्याम,
बोलो छो तमे शुं बलराम ।
आवे एक बेद विधन,



तेने कोण गोरवे छे रे मन ।
सामटां विधन आवे जो कोटि,
पण कथा करुं नहि खोटि ।
कथा विना तो केम रेवाय,
दिन रात्रि केवी रीते जाय ।

इसलिये ग्रामवार्ता छोडकर श्रीहरि के चरित्रों वाला सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, वचनामृत, शइक्षापत्री, श्रीहरि चरित्रामृत सागर, भक्त चिंतामणी, निष्कुलानंद काव्य, अद्भुतानंद स्वामी की बातो, गोपालानंद स्वामी की बातो, निर्गुणानंद स्वामी या प्रसादानंद स्वामी अथवा माधवानंद स्वामी की बातो, श्रीमद् भगवद् गीता, भागवत आदि का तथा ब्रह्मानंद, प्रेमानंद एवं मुक्तानंद स्वामी के रचे हुए पदों का प्रतिदिन सेवन करने का नियम लेना चाहिए ।

उपरोक्त सभी को स्वीकार करके आनंद के साथ ईश्वर की भक्ति करना, नमस्कार करना, ईश्वरीय गुणों का चिंतन करना, तथा प्रभु के गुणों को अपने जीवन में उतारना उन्ही कारणो से श्रीहरि नाना विध उत्सव किये हैं । इसी में दिव्यातिदिव्य स्वरुप का दर्शन होता है । ईसिलिए लिखा है''विद्ययामृत मश्नुते'' आत्मविद्या से अमरता प्राप्त होती है । यही अंतिम साध्य है । इसीलिये मनुष्य को यह चरितार्थ करने के लिये सतत प्रयत्न शील रहना चाहिए । जिससे इस मनुष्य का अंतिम सत्य सुखमय हो सके ।

ये विद्यं चाविद्यांय तत् उभयं वेद सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतश्नले ॥

(इशावत्श्योनिषद)

जो आत्मज्ञान तथा प्राकृतिक विज्ञान (विद्या एवं अविद्या) दोनो को जानता है वह मृत्यु से दूर होकर अमरत्व को प्राप्त करलेता ।

मनुष्य में जो कुटिलता, इर्ष्या, राग, द्वेष इत्यादि है उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए । आध्यात्मिक ज्ञान से ही यह सम्भव है । श्रीहरि के दिव्यातिदिव्य स्वरुप का दर्शन भी इसमें सहायक है । नाना विध उत्सवो के माध्यम से भगवत् परायणा होती है । धनादि ऐश्वर्य प्राप्त होना ठीक है लेकिन उसका सदुपयोग एवं जनकल्याण की भावना सबसे पवित्र कही गयी है ।

ईश्वर सभी का पोषक, अद्वितीय ज्ञानी, सभी का नियामक , तेजस्वी

स्वस्म, सभी का पालक है । जिसका एक तेजोमय ब्राह्य दृशष्य स्वस्म एवं दूसरा आंतरिक कल्याणमय आनंद स्वस्म है। जो हरि का दोनो स्वस्म अवतार एवं अवतारी के स्वस्म का रद्शन आदरज गाँव से लगे तालाब के किनारे जाम्बु वृक्ष के नीचे बैलगाडी में श्वेताम्बर धारण किये हुए श्रीहरि कृष्ण का दर्शन ही बाह्य तेजोमय दिव्य मनुष्य के चरित्र का दर्शन् है तथा रतु खांट के आग्रह के वश में होकर अन्नकूटोत्सव का भव्योत्सव मनाकर अनंत स्वस्म मेंसभी को दिव्य दर्शन का लाभ दिये थे। दूसरी तरैफ आन्तरिक कल्याणमय दिव्यातिदिव्य श्रीहरि का स्वस्म है। "ए रसना चाखणहार छाश न पीये रे लोल"। यह स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी की रहस्यमय बात समझकर सत्संग कलेना ।

आज समाज में जो कुरितियां है, जो दिखावे के कार्य करते है, जो पाखड कल्पित है, उन सभी का नाश करने के लिये ही भगवान का अवतार हुआ । स.गु. भूमानंद स्वामी ने लिखा है -

आदित्य सम उदय थया,
सूरज सहजानंद ।
अज्ञान तिमिट टालवा लई
मुनिया ना वृन्द ॥

समस्त आश्रितों को यह बात समझकर अपने जीवन में उतारकर धर्मकुल के आश्रित बन कर जीवन का कल्याण करना चाहिए। यही मनुष्य जन्म की चरितार्थता है ।

•

श्रीजी स्वयं नरनारायणदेव

- पटेल गांडाभाई (कोल्हापुर)

बदरिकाश्रम में श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने मरिच्यादि ऋषि आये । उद्धवजी एवं धर्म-भक्ति भी दर्शन करके सभा में आकर बैठे। एकाग्रमन से भगवान का चिंतवन कर रहे थे। उसी समय दुर्वासा ऋषि आये, उनका सन्मान नहीं हो सका, जिससे सभी को श्राप देते हुए कहे कि आप सभी भरत खंड में मनुष्य शरीर प्राप्त करके असुरों से कष्ट प्राप्त करो ।

सभी लोग विनययुक्त दुर्वाषा ऋषि को शांत किये तथा कहे कि हम नारायण ऋषि का ध्यान कर रहे थे जिससे आपके आने का भान हीं नही रहा, आप क्षमा करें। यह सुनकर ऋषि ने कहा कि धर्मदेव एवं मूर्ति दोनो मनुष्य शरीर धारण करेंगी। इन्हीं के शरीर से नरनारायण ऋषि पुत्र के स्म में अवतार धारण करेंगे। वे ही हमारे श्राप से आप सभी को मुक्त करेंगे । आप सभी की रक्षा भी करंगे ।

इसी कारण कोशल देश के छपैया गाँव में धर्म देव एवं भक्ति माता से श्री नरनारायणदेव अवतार धारण किये । वे ही श्रीजी महाराज, हरिकृष्ण महाराज, सहजानंद स्वामी हुए .

यह बात जेतलपुर बचनामृत ५ वें में कहते हैं कि - "हम भगवान श्री नरनारायण देव ऋषि ही हैं" मेरे शरणागत जो होंगे हम उनके पाप को भस्म कर देंगे। जो धर्म नियम में रहेंगे उन्हे अन्त समय दर्शन देकर अक्षरधाम में लेजायेंगे । वे अक्षरधाम के पति पूर्ण पुस्योत्तम प्रथम धर्म देव- भक्ति द्वारा श्री नरनारायण ऋषि के स्म में प्रगट होकर बद्रिकाश्रम में तप करते हैं । वे नारायण ऋषि कलियुग में पाखंडी मतका खडुन करके, अधर्म का नाश करकें धर्म की स्थापना करेंगे। धर्म, ज्ञान, वैराग्य के साथ भक्ति का विस्तार करने के लिये श्री धर्मदेव भक्ति से अवतरित होकर नारायणमुनि के स्म में प्रगट होकर सभामें विराजमान रहतें हैं । ऐसा कहकर पुनः ध्यान मग्न होकर कहने लगे हम बार-बार श्री नरनारायणदेव का स्मरण इसलिये कराते है कि जो श्रीकृष्ण पुस्योत्तम अक्षरधाम के धामी है, जो श्री नरनारायणदेव इस सभा में विराजमान है, उन्हीं का मुख्यत्व सब में बना रहे, ऐसा हमारा स्म है ऐसा सभी में दृढ भाव आवे इस हेतु से अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया है। अहमदाबाद के छठ्ठे वचनामृत में कहते हैं कि "श्रीकृष्ण भगवान स्वयं श्री नरनारायणदेव के स्म में धर्म-भक्ति से प्रगट हुए हैं। श्री नरनारायणदेव हमारे स्म है ऐसा जानकर श्रीनगर में हमने प्रतिष्ठित किया है । इसलिये हममें तथा श्री नरनारायणदेव में कोई भेद नहीं समझना ।

जेतलपुर के चौथे वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते हैं कि जिन श्री नरनारायणदेव मेंआप सभी की निष्ठा है वे ही नरनारायणदेव इस सभामें निरन्तर विराजमान रहते हैं । इसलिये आत्मनिष्ठ होकर नित्यानंद में संशय रहित होकर उन्हीं परमात्मा की भजन करना ।

गढडा के प्रथम के १८ वें वचनामृत में कहते हैं कि "मेरी वाणी एवं मेरे बताये मार्ग पर चलोगे तो भगवान के धाममें जाओगे। हमारे हृदय में श्री नरनारायणदेव सदा विराजमान रहते हैं। मैं सत्य आनंद युक्त हूँ।

इस प्रकार कितने ही वचनामृतों में अपने प्रगट होने का निश्चय कराये हैं । स्वंय श्री नरनारायणदेव प्रगट है इसमें कोई भी सत्संगी संदेह न करें । हमें प्रगट पुस्योत्तम समझकर भजन करेंगे तो अंत काल में लेने हम अवश्य आयेंगे । यह हमारा संकल्प है इसे हम समय आने पर चरितार्थ करते हैं ।

•

सत्संग सुरभि :

बाद में बालम विहार आये

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

महेसाणा जिला के विजापुर तहसील में विहार एक उत्तम गाँव है । जहाँ पर स्वामिनारायण धर्म के सिवाय दूसरा कोई धर्म नहीं है । सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी आगे है ।

यहाँ का मंदिर दक्षिण द्वार का है । श्री स्वामिनारायण भगवान की सुन्दर चित्र प्रतिमा है । मंदिर के ऊपर सुन्दर टावर है । इससे पूर्व यहाँ पर पटेल हीराचंगावत का घर था । हीरा चंगावत पटेल श्रीजी महाराज के परम भक्त थे । उन्हें श्रीजी महाराज प्रतिदिन दर्शन देते थे । जब खेत में जाते तब रास्ते में बात करते जाते - यह देखकर गाँव वाले उपहांस करते थे । पटेल आप पागल हो गये हैं क्या ? ऐसा गाँव वाले कहते थे । पटेल कहते कि मैं प्रत्यक्ष स्वामिनारायण भगवान के साथ बात करता जाता हूँ । हीराचंगावत की जो चल-अचल सम्पत्ति थी वह सब भगवान स्वामिनारयण को दे दिया । वहाँ पर आज दिव्य मंदिर बना है । एक समय श्रीहरि संत-पार्षद के साथ दंढाव्य देश में विचरण करते हुए सं. १८७५ में प्रथमबार विहार गाँव में आये थे । उस समय गाँव में कोई सत्संगी नहीं था । संपूर्ण गाँव शक्ति का उपासक था । गाँव के सभी ब्राह्मण शक्तिपंथवाले थे । ऐसे शक्ति पंथवाले गाँव में श्रीजी महाराज पांच सौ संतो के साथ पधारे थे ।

गाँव के अग्रगण्य पीतांबर त्रवाडी, तुलसीदास पटेल, कुबेरदास पटेल, इसके अलांवा अनेको ग्रामजन मन में ऐसा संकल्प करके चले कि यदि ये भगवान हो तो प्रत्येक व्यक्ति का नाम लेकर बुलाये । अन्यथा ऐसा नहीं होगा तो उनके ऊपर धूल, कीचड इत्यादि फेंक कर गाँव के बाहर भगा दिया जायेगा । ऐसा निश्चय करके सभी धूल-मिट्टी लेकर निकल पडे । महाप्रभु ने दूर से ही आते देखा । श्रीजी महाराज प्रेम मय दृष्टि से सभी का नाम लेकर बुलाने लगे । आइये पीताम्बर त्रवाडी, आइये तुलसी पटेल, आइये कुबेरदास इत्यादि एक-एक नाम के साथ प्रेम से बुलाने लगे । इस प्रकार का भाव देखकर सारे गाँव के लोगों में परिवर्तन हो गया । सभी सरमा गये । धूल-माटी दूर पेंक दिये । महाराज के पास आकर सभी दंडवत प्रणाम करने लगे । हे महाप्रभु ! हे अन्तर्यामी ! आप ही सभी के नियंता महाप्रभु है । हम बुद्धिहीन है, इसी कारण यह अपराध हुआ है । आप हमारे इन अपराधो को क्षमा कर दीजिये ।

श्रीजी महाराज सभी को सभा में बैठने की आज्ञा की । सभी को जन्म-मरण के रहस्य को समझाया । उपदेश सुनकर श्रीजी महाराज से पूछने लगे । हे महाप्रभु ? हम सभी शक्तिपंथियों का उद्धार कैसे होगा । आप कृपा करके पूर्वकृत पापों के निवारण का उपाय बतायें ।

बाद में श्रीजी महाराज ने सभी के हित की बात की । चाहे जितना बड़ा पापी हो भगवान की शरण में आकर पश्चाताप करे तो सभी पाप जलकर भस्म हो जाता है ।

बाद में गाँव के अगुआ लोग भगवान के चरणो में गिरकर प्रार्थना करते है कि हमारे पापों को धोने के लिये गाँव में पधारिये । पश्चात श्रीजी महाराज पांचसो परमहंसो के साथ बाजा गाजा के साथ पीतांबर त्रवाणी के घर पधारे, वहीं पर एक बडी सभा का आयोजन किया गया । जिसमें उपदेश देते हुए श्रीजी महाराज ने कहा कि आप लोग एक निष्ठा भक्ति करें इसी में परमार्थ निहित है । श्रीजी महाराज एवं पांच सौ परमहंसो को भोज कराने के लिये ब्राह्मणों से भोजन बनवाया । श्रीजी महाराजने त्रवाणी पीतांबर को बुलाकर कहा कि आप सभी का प्रेम देखकर हमें बडाआनंद आरहा है, अत: आप पहले ग्रामजनों को भोजन कराइये बाद में हम भोजन करेंगे ।

महाराज की ऐसी बात सुनकर गाँव के लोग विचार में पड़ गये । ''रसोई थोडी है इतने में सम्पूर्ण गाँव कैसे खा सकेंगा ? अन्तर्यामी सभी के विचार जान गये । महाराज ने कहा ''आपलोग चिन्ता मत कीजिये । सम्पूर्ण गाँव को भोजन का निमंत्रण दे दीजिए । जिस प्रकार द्रोपदी की लाज रखी, जिस प्रकार नरसिंह महेता की हुंडी भगवानने स्वीकार की थी, आज भी वे ही भक्त की लाज रखेंगे । भक्त का काम भगवान स्वयं करते हैं ।

महाराज की कल्याणमयी वाणी सुनकर सभी प्रसन्न हो गये । सम्पूर्ण गाँव को भोजन हेतु निमंत्रण दे दिया गया ।

रसोई तैयार हो गयी, रसोई की आरती करके कपड़े से ढंक कर एक तरफ से भोजन निकाला जाय, कपडा हटाना नहीं ऐसी आज्ञा श्रीजी महाराजने की ।

सभी भक्तजन जब भोजन हेतु बैठ गये, तब श्रीजी महाराज लाडू की पारात स्वयं लेकर परसने लगे । जब स्वयं परमात्मा भोजन परसने वाले हों तो भोजन कैसे घट सकता है । सारा गाँव खाकर तृप्त हो गया । सभी लोगों के भोजन करने के बाद गाँव के अगुआ लोग रसोई देखने गये । वहाँ देखा कि जितना बना था उसमें से कम हीं नहीं हुआ है । तब आश्चर्य की सीमा नहीं रही । सभी ने निश्चय किया कि ये कोई साधारण पुरुष नहीं है बल्कि स्वयं परमात्मा है ।

बाद में सभी हाथ जोड़कर भगवान की प्रार्थना करने लगे । हे विश्वंभर ! हे महाप्रभु ! अब आप प्रसाद ग्रहण कर लीजिए । तब श्रीजी महाराज पांच सौ परमहंस के साथ भोजन के लिये पधारे ।

इस प्रकार अलौकिक लीला का दर्शन करने गाँव के अनेकों मुमुक्षुजन आये । आज विहार गाँव धन्यता का अनुभव करके

कृतार्थ हो रहा था ।

पीतांबर त्रवाडी गाँव में सबसे अग्रगण्य थे । वे श्रीहरि के अनन्य आश्रित हो गये । कुछ समय बाद पुन: विहार गाँव में श्रीजी महाराज पधारे उस समय पीतांबर का नया मकान बन रहा था । श्रीजी महाराज उन्हीं के घर पधारे । महाराज को दूध पीने की इच्छा हुई तब त्रवाडीने कहा महाराज ! भैंस हमारी चरने गयी है, वापस आयें तो ताजा दूध पिलायेंगे । महाराजने कहा आपके गौशाला में एक भैंस तो है, त्रवाडीने कहा महाराज ! वह पडिया है, महाराजने कहा उसी को दूहें, ऐसा किया गया, उसमें पर्याप्त दूधनिकला श्रीजी महाराज पीकर तृप्त हो गये, इसका समाचार सम्पूर्ण गाँवमें फैल गया । अब तो सभी यह चमत्कार देखकर भगवान के दृढनिष्ठावाले हो गये । इस प्रकार श्रीजी महाराज विहार गाँव में अनेक लीला किये है ।

श्रीजी महाराज के प्रसादी के बर्तन : थाली, कटोरी तांबे का कलश पारात इत्यादि आज त्रवाडी परिवार के पास मौजूद है । पीतांबर त्रवाडी को भगवानने पूजा में जो मूर्ति दी थी वह भी आज वहाँ विद्यमान है । कुबेरदास पटेल के घर जहाँ महाराज रसोई बनवाते थे वह आज भी विद्यमान है । जिसे प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर में समर्पित हो गयी है ।

अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति परमात्मा उस समय पृथ्वी पर घूम-घूमकर विना अस्त्रशस्त्र के प्रेममय दृष्टि से सभी को अपना बनाया था । यही उनका अस्त्र था । विहार जहाँ पर शक्तिपंथियों की बोलबाला थी वहाँ पर श्रीजी महाराज बार-बार पधारकर गाँव के जनों को स्वामिनारायण मय बना दिया था ।

एक दृष्टि से मतपंथियों के हृदय में परिवर्तन करके सहजानंद के रंग में रंग दिया था । ऐसा अलौकिक ऐश्वर्य - प्रताप महाप्रभु श्री सहजानंद स्वामी का था, जिन्हे कोटि-कोटि प्रणाम हो ।

विविधतावाले वेद

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

वेदो में क्या है ? वेद अपौरुषेय हैं । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद ये चार मंत्र संहिता ईश्वर प्रदत्तज्ञान है । ये वेद विश्व के सबसे पुरातन साहित्य हैं । प्रस्तुत चार वेद सर्व विद्यामय हैं । इसमें केवल व्यक्तिगत कौटुंम्बक, सामाजिक, एवं राष्ट्रिय अभ्युदय की ही बात नहीं है, अपितु आध्यात्मिक एवं पारलौकिक ज्ञान विद्या का सम्पूर्ण रहस्य इसमें निष्यूत है । इसमें गणित, विज्ञान, खगोल, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, सृष्टि विज्ञान, संगीत, कृषि, उद्योग, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति, आयुर्वेद, दर्शन, योग, कर्मफल, मोक्ष, मनोविज्ञान, उडुयन शास्त्र, पर्यावरण विज्ञान, धातु विज्ञान, प्रकाश विज्ञान, भाषा विज्ञान इत्यादि सभी इन वेदों में समाविष्ट हैं । परंतु दुर्भाग्य कीबात यह है कि आज वेदों का पठन-पाठन लुप्त प्राय हो गया है ।

सर्वशक्तिमान परमात्मा के मुख से ही ये चारो वेद निकले हैं । कोई मनुष्य की ये कृति नहीं है । इसलिये सभी के लिये यह आवश्यक है कि वेदों में जो वर्णित है या वेद जो मार्गदर्शन करते है उन्हीं का सभी लोग पालन करें । वचन सिद्धि को प्राप्त तपस्वी के मुख से निकली वाणी मंत्र विद्या वन जाती है । वाणी, विचार, वर्तन, ये सभी मनुष्य के लिये परमावश्यक हैं । यह सतत परिवर्तनशील होते है । इनके साथ जो समता सिद्ध करे वही श्रेष्ठज्ञानी है । विचारों के युद्ध में ये चारों वेद अमोघ शास्त्र के समान है ।

ये वेद अन्धकार में प्रकाश फैलाते हैं । जीवन में पैसे की अपेक्षा ज्ञान का महत्व विशेष है । ज्ञान का महत्व वेदों में संचित है । वचनामृत ग.प्र. २४ में उल्लिखित है कि "ज्ञान द्वारा स्थिति प्राप्त होती है ।" यह ज्ञान प्रकृति-पुरुष से परे है। जो दुष्ट न हो उसी को ज्ञान की प्राप्ति होती हैं ।

वेद सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विचारों का आदर्श है । दया के सागर के दिलका लेखाजोखा है । सामान्य मनुष्य में भी यह भाव आजाय तोविशेष प्राप्ति का योग बनता है । रामायण, महाभारत, भागवत गीता, शिक्षापत्री, वचनामृत, इत्यादि आध्यात्मिक पुस्तकों के श्रवण से या पठन से अपने वेद उपनिषद के संस्कृत काल में प्रविष्ट हो सकते हैं । ऋग्वेदादि जो चार वेद हैं वे अनेक प्रकार की विद्याओं से सम्पृक्त हैं । वेदों में अवयवस्य विषय तो अनेक हैं । परंतु उस में चार मुख्य है । (१) विज्ञान अर्थात् सभी पदार्थों का यथार्थज्ञान । (२) कर्म (३) उपासना (४) ज्ञान । परमपद अर्थात् मोक्ष । जिस में परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करके सदा सुख में रहना । जो सभी आनन्दो से युक्त सभी दु:खो से रहित, सभी अवतारों का अवतारी, सभी कारणों का कारण, सर्व शक्तिवाला वह परमात्मा है । जिसके नाम अनेक है । उसी में सभी वेदों का मुख्य तात्पर्य एवं तारतम्य है । वेदों में दो विद्या है । (१) परा (२) अपरा । (१) पराविद्या वह है जिससे पृथ्वी एवं तृण से लेकर प्रकृति पर्यंत पदार्थो के गुणो के ज्ञान से कार्य सरल हो जाता है । अपरा विद्या से पराविद्या उत्तम है । इसलिये विद्या एवं वित्त दोनों का संयम पूर्वक उयोग करना चाहिए । विद्या पवित्र वस्तु है । इसलिये विद्याधाम पवित्र मंदिर के समान है । विद्यार्थीजीवन विद्याकाल में विद्या के उपासना का पवित्र काल है । परंतु विद्यार्थी को सुख कहां से ? सुखार्थीको विद्या कहाँ ? विनय एवं भक्ति से विद्या की प्राप्ति होती है । प्रमाद एवं अभिमान से ज्ञान शुष्क हो जाता है । विज्ञान मानव आत्मा की अत्यंत महान सृष्टि है । भिन्नविद्या प्राप्ति के लिये चार वेदों को अलग किया गया है । वेदों का पठन पाठन अनिवार्य है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

तिजोरी खोलने की चाभी

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

बात है खजाना की, खजाना भी कैसा। अति अद्‌भुत भीतर गहने, सोने-चांदी, हीरा-माणिक, नाना प्रकारके रत्न उस में भरे हैं। इससे भी अधिक कल्पना न आवे इतना भरा हुआ है । लेकिन मित्रो ! जिसके हाथ में चाभी आवे उसी को यह सब मिलता है। आइये एकाध खजाना खोलने का प्रयास करते हैं।

कार्यं न सहसा किञ्चित् कार्यो,
धर्मस्तु सत्वरम् ।
पाठनीयाधीत विद्या कार्यं,
संगोऽन्वहं सताम् ॥

श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री के एक श्लोक में चार आज्ञा का समावेश किया है । शतानंद स्वामी इस श्लोक की व्याख्या करते हैं कि सहसा अर्थात् एकाएक (विना विचारे) संसार का कोई कार्य नहीं करना चाहिए ।

"विना विचारे जो करे सो पीछे
पछताय ।
काम बिगाडे आपनो जग में होत
हंसाय ।"

पैसे को कहीं डालने से पहले विचार करना चाहिए । व्यापार के लिये भी आरंभ के समय विचार करना चाहिए। शास्त्र कहते हैं कि व्यवहार का कार्य मस्तक से करना चाहिये, धर्म का आचरण हृदय से करना चाहिए। विचार मस्तक में रहता है, श्रद्धा हृदय में रहती है। इसलिये धर्म का आचरण श्रद्धा से करना हितकर है। विचारपूर्वक जो व्यक्ति कार्य करता है वह कभी दुःखी नहीं होता है। विना विचारे जो करता है वह दुःखी होता है । अस्थिर स्वभाव व्यवहार के योग्य नहीं होता है। नीति शास्त्र में एक कथा आती है ।

एक व्यक्ति बहुत साहसी था । विना विचारे कोई भी कार्यारंभ कर देता था । उसके गुरुने कहा तुम्हें बहुत जल्दी क्रोध आती है । तुम्हे एक उपाय बता रहा हूँ जब तुम्हें क्रोध आवे तब दशकदम आगे पीछे होजाना। एक दिनउसके घर में ऐसी घना घटी, वह बाहर से रात्रि में वापस आया। मंद प्रकाश में उसने देखा कि - एक ही आसन पर मेरी पत्नी के साथ व्यक्ति सोया हुआ है । देखते ही उसने तलवार हाथ में ले लिया । नाना प्रकार की शंका के साथ अपनी पत्नी एवं जो भी साथ में है उसे - अर्थात् दोनो को मार डालूँ। लेकिन गुरुकी बात याद आ गयी दश कदम पीछे हट गया । उसी समय बेटी की नींद टूट गयी और देखी तो बाबूजी खडे है, संयोगवस बेटी ससुराल से आई थी, अपनी मां के साथ प्रेम के कारण सोई थी। यदि दश कदम पीछे नहीं हटा होता और, उसी क्रोध में तलवार चल गयी होती तो क्या होता ?

इसलिये बिना विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए। दूसरा उदाहरण संस्कृत जगत मैं है - भारवि नाम के एक प्रख्यात कवि थे। चारो तरफ जिसकी यशोगाथा फैली हुई थी। लेकिन पिता सदैव खराब शब्द बोलते रहते। एक दिन भारवि के मन में हुआ की पिताजी मेरे लिए कभी अच्छा नहीं कहते - खराब ही कहते है - इन्हे मारडालूं ।

एक रात्रि में भारवि के माता पिता कुटी में सोये हुऐ थे। भारवि बाहर सोये थे। पिता को मारने के लिये बजनवाले पत्थर को उठाये और कुटी के ऊपर चढे, उसी समय भारवि की माता भारवि के पिता से कह रही थी कि भारवि इतना बडा विद्वान है। सारा समाज जिसकी प्रशंसा करता है, आप क्यों नहीं करते। तब भारवि के पिता ने कहा यदि उसकी प्रशंसा करुँ तो उसकी प्रगति रुक जायेगी। मैं अभी और बडा विद्वान देखना चाहता हूँ। मैं अपने बेटे की विद्वता पर गर्व करता हूँ, सब जानता भी हूँ लेकिन अभी और आगे बढे इसके लिये निंदा करता हूँ। यह सुनकर भारवि को बडा पश्चाताप हुआ, वहाँ से अपने श्वसुर के घर चल दिये । वहाँ उन्हें एक पंक्तियाद आगयी - "सहसा विदधीत न क्रियामविवेक, परमापदंपदम् ।" दूसरी पंक्ति भगवान स्वयम् पूर्ण किये - "वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वममेव संपदः ।

इस प्रकार अधुरी पंक्ति को पूर्ण करके तकिया के नीचे प्रभु रखकर अदृश्य हो गये। व्यर्थ का साहस करने वाला दुःखी होता है । इस प्रकार के भाव वाला यह भारवि का श्लोक है, लेकिन इससे भी कई गुना अधिक । "कार्यं न सहसा किंचित कार्योधर्मस्तु, सत्वरम्" इस एक ही पाद में स्वामिनारायण भगवानने सम्पूक्त कर दिया है । इसलिये व्यवहार का कार्य विचार कर करना चाहिए ।

धर्म कार्य पर बल देते हुए प्रभु ने लिखा है कि तत्काल करना याहिए । मनुष्य का मन चंचल है । साम होते हो सकता है विचारों में परिवर्तन हो जाय । जैसे दाल में पानी की मात्रा बढाते जाइये तो पानी हल्की होती जोयेगी, ऐसे ही जितना देर होगी उतना मन हल्का अर्थात् पखिर्तित होता जायेगा ।

अहमदाबाद में एक ऐसी घटना बनी है । वर्षो पूर्व एक गृहस्थ सभा में संत से प्रश्न किया कि, मेरी मा धाम में चली गयी है, उनके उपलक्ष्य में ठाकुरजी को राजभोग एवं संतो को भोजन देना है । कितना खर्च होगा ? संत ने कहा हजार-बारह सो जितना । भक्तने कहा हाँ हमे रसोई देना है पंद्रह दिन के बाद । पंद्रह दिन के बाद कहता है कि पांच सो रुपये दूं तो चलेगा ? संत ने कहा यदि तुम्हारी शक्ति नहीं है तो पांचसो में भी हो जायेगा । समय वीतता गया एक दिन इग्यारह रुपये में रसोई करवा दी । पैसा होते हुए भी संकल्प पुरा नहीं कर सका। कारण यह कि समय वीतते विचारों में परिवर्तन होता गया । इसलिये इस श्लोक में भगवान स्वामिनारायणने कहा कि धर्म का कार्य त्वरित करना चाहिए । भगवानने अनपे भक्तों के लिए कितने नीति केमार्ग बताये है । इस प्रकार का आचरण भक्त करें तो उनके जीवन में कभी दु:खनहीं आयेगा । अपने पास जो विद्या हो उसे सुपात्रो में देना चाहिए । पुत्र हो या शिष्य कुपात्र हो तो उसे विद्यानहीं देनी चाहिये ।

इस श्लोक की अंतिम आज्ञा यह है कि - ''कार्यं संगोऽन्वहं सताम्'' अन्वहं अर्थात् प्रतिदिन संतो का समागम करना चाहिए । सम्पूर्ण दिन संसार में रहकर, संगी हो या कुसंगी हो उसी के बीच में रहकर मुमुक्षु आत्मा संत समागम न करे तो कुसंग का बल बढता जायेगा । संत समागम संसार रुपी सर्प के जहर को उतारता है ।

संत समागम क्या है ? प्रथम तो संत के पास बैठना, उनकी आज्ञा मानना, कथावार्ता श्रवण करना इत्यादि । किसी भी तरह से संत समागम हो तो दु:खी नहीं होगा, इसके साथ ही सत्संग में दृढता होगी ।

मित्रों ! यह कैसा खजाना लगा । यह तो अभी एक ही खजाना खुला है । इस तरह भगवान स्वामिनारायण ने २१२ खजाना दिया है । इसमें से सुख, शांति, कल्याण, मोक्ष, किसे मिल सकता है । यदि नित्य प्रतिदिन वांचन का प्रयत्न किया जाय तो धीरे-धीरे सुखरुपी खजाना की प्राप्ति हो सकती है ।

●

एकाग्रता विना पूजा कैसी ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

नीलकंठवर्णी सात वर्ष तक वन विचरण पूर्ण करके, लोज में रामानंद स्वामी के आश्रम में मुक्तानंद स्वामी एवं अन्य पचास जितने संतो के साथ रहते थे । नीलकंठ वर्णी का मुक्तानंद स्वामी के प्रति खूब प्रेम था । मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा में रहने की आज्ञा रामानंद स्वामी ने नीलकंठवर्णी को दिया था । आज्ञा प्राप्त कर नीलकंठवर्णी मन, कर्म, वचन से नीति नीयम में रहकर कभी कभी अपना चमत्कार भी दिखाते थे ।

एक दिन की बात है मुक्तानंद स्वामीने तुमडी को सुखाने के लिये आश्रम में बाहर रखे थे । बाद में भगवान की मानसिक पूजा करने बैठ गये । दोपहर में भगवान को प्रसाद ग्रहण करने के लिए बुलाते हैं । हे भगवान ! हे दयालु ! मेरे भाव को ग्रहण करने पधारें - ''बैठा जमवा जगतनो आधार रे, मैं तो प्रेम करी पीरस्यों कंसार रे ।''

भगवान को भोजन के लिये ज्यों ही स्मरण करते है, उसी समय बाहर तुंमडी सूखने के लिये रखी है कहीं कौआ उसे बिगाड न दे । ऐसा विचार आते ही ''तन की जाने मन की जाने'' इतने में वर्णिराज ने मुक्तानंद स्वामी को कहा कि ''स्वामी तुमडी में बहुत माल है कि भगवान की भजन में ? मुक्तानंद स्वामी तुरंत समझ गये और वर्णिराज से माफी मांगते हुए कहे कि ''वर्णिराज मेरे मन में तुमडी की याद आगयी, आपने मेरी आंख खोल दीया भगवान से अधिक दुनिया में क्या हो सकता है । भगवान में तन्मयता आना बडा कठिन है ।

मित्रो ! श्रीजी महाराज मुक्तानंद स्वामी को टोक कर सही मार्ग दे सकते हैं, यद्यपि मुक्त मुनि के जीवन में एक ही बार संकल्प आया, यहाँ तो सांसारिक व्यस्तता में रोज कितने संकल्प होते रहते है, अब रही बात भगवान सामने आकर प्रत्येक क्रियाओं में टोकते रहे । इसका एक ही मार्ग है । भगवान के सामने बैठने पर मात्र भगवान के गुणानुवाद का चिन्तन होना चाहिए मन भले बाह्य जगत में जाये बार-बार प्रयास करते रहने पर चित्त की वृत्ति परमात्मामय बन जायेगी । श्रीहरिने वचनामृत में कहा है कि ''मन इंद्रिय अंत:करण मात्र एक घड़ी भी भगवान की भजन करता होतो सम्पूर्ण दिन का किया पाप जल जायेगा । इसलिये ध्यान, पूजा, भक्ति में एकाग्रता आवश्यक है ।

।। भक्तिसुधा ।।

चलो हम भी मूली चले

- सां.यो. मंजूबहन, भारतीबहन गुरु गोदावरीबा (अहमदाबाद-हवेली)

आज वसंत आव्यो मारी आली,
धामो धाम चलो जइये रे।
श्री महाराजश्री संगाते सजनी
रंग की धूम मचाइये...: आज
महाराजश्रीनुं मुख निरखी हरखी ने,
अविनाशानंद ना नाथनी संगे
रंग रमिये मतवाली .... आज

महान पवित्र तीर्थ भूमि मूली, जहाँ पर प्राचीन काल में दत्तात्रेय भगवान का भी आश्रम था । वहीं पर भगवान स्वामिनारायण ने बारम्बार पधारकर अपने दिव्य चरण से अंकित किया है । श्रीजी महाराज ने स्वयं उस भूमि की महिमा का गुणगान किया है। जोभी इस पवित्र भूमि में आकर रजकण को मस्तक पर धारण करेगा उसके सभी पाप भस्म होजायेंगे । जान-अनजान में जो भी राधाकृष्ण देव एवं हरिकृष्ण महाराज का जो दर्शन करेगा उनका पाप नष्ट हो जायेगा । ऐसे प्रतापी देवों की प्रतिष्ठा महोत्सव वसंत पंमची के दिन आकर जो दर्शन करेंगे उन्हें चारोधाम की यात्रा का फल मिलेगा। श्रीजी महाराज वसंत पंमची के दिन अपने हाथों में पिचकारी लेकर रंगोत्सव करते थे । उस समय की शोभा का कोई पार नहीं होगा । वैसा ही उत्सव अभी मनाया गया। जिसमें पूज्य महाराजश्री एवं पू. लालजी महाराजश्री भी श्वेत वस्त्रों को धारण करके किंसुक पुष्प के रंग को पिचकारी में भरकर जब त्यागी गृही के ऊपर डालते थे उस समय श्रीजी महाराज की झांकी का दर्शन होता था । ऐसे वसंत पंचमी का उत्सव वर्ष में एक ही बार आता है। इसमें यदि रहगये तो अपने से बडा कोई अभागी नहीं होगा ।

एक समय की बात है, श्रीजी महाराज उस समय विद्यमान थे। मूली देश में एक स्त्री भक्ता जामबा थी, उन्हें राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज ऊपर दृढ निष्ठा थी, वे प्रतिदिन मंगला आरती का दर्शन करने के बाद ही अन्नजल लेती थी। जब मंदिर आती तो ऋतु के अनुसार ठाकुरजी को फल भेंट करती थीं । एक दिन जब वे फल अर्पण कर रही थी, उसी समय भगवान कृष्ण की मूर्ति से आवाज आयी कि जामबा इस समय आमकी सीजन है, तो आम क्यों नहीं लाई । यह आवाज जामबा सुनकर पागल हो गयी। आनंदित मन से तुरंत ही वापस बाजार में जाकर उत्तम आम को लाई जिसे भगवान स्वयं अपने हाथो में लेकर खाये थे, जिसे सभी बहनों ने प्रत्यक्ष दर्शन किया था । सभी को आनंद की अनुभूति हुई थी । सभी आश्चर्य चकित हो गये क्योंकि पुजारी वहाँ आम रखा नहीं था तो आम कहाँ से आया। एक दूसरे से पूछा गया तो बाद में ख्याल आया कि जामबा के हाथों से भगवान ने आम को खाया है। सभी ब्रह्मचारी एवं नंद संत भक्तजन के आनंद की सीमा न रही । मूली के राधाकृष्णदेव का यही अलौकिक चमत्कार है । हमभी ऐसे महाप्रभु का दर्शन करने प्रति वसंत पंचमी को मूली अवश्य पधारें।

•

लेकिन आप कब पधारे

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

एक समय श्रीजी महाराज विजापुर पधारे थे। उस समय बजीबाई के भतीजे का विवाह हो रहा था। बजी फूआ भतीजा के विवाह को लेकर खूब प्रसन्न थी । ढोल, शहनाई बज रही थी। बजीबाई के आनंद की सीमा नहीं थी ।

इधर महाराज गाँव की सीमा में आगये। नींब वृक्ष के नीचे गाँव के बाहर रुके । उन्होंने संदेशा भेंजा कि बजीबाई के स्वामिनारायण गाँव के बाहर आये हुए है।

बजीबाई विवाह के शुभ प्रसंग में लगी थी, उसी समय महाराज का आदमी आकर कहा कि बजीबाई ? आपके स्वामिनारायण गाँव के बाहर आकर रुके है, आप को याद कर रहे हैं।

बजीबाई के कान में स्वामिनारायण महाराज का शब्द सुनाई दिया कि आनंद में पागल हो गयी । तुरंत ही चुनरी ओढ कर महाराज के पास चल दी। अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति आज मेरे गाँव में आकर मुझे याद कर रहे है । वाह मेरे भगवान आज मैं धन्य हो गयी ।

गाँव के बाहर आकर महाराज के चरण में गिर गयी। महाराज ने पूछा "बजीबाई ! आज नये वस्त्र पहनी हो क्या कारण है ? बजीबाई ने कहा, महाराज ! मेरे भतीजे की आज शादी है, इसीलिये इतनी तैयारी है।

महाराज ने कहा वह कहाँ है ? बजीबाईने कहा, ग्राम्य देवता के पास । आप मेरे घर पधारिये । आग्रह करके महाराज को अपने घर ले गयी ।

महाराज संतो के साथ बजीबाई के घर आये । बजीबाईने उत्तम आसन पर महाराज को आसीन किया ।

ब्राह्मण द्वारा सुन्दर रसोई तैयार करवाई। महाराज बडे प्रेम से भोजन को ग्रहण किये। जब महाप्रभु भोजन कर रहे थे तब बजीबाई पंखा झल रहीं थी, साथ में प्रभु को निरखते हुए हृदय में उतार रही थीं। "महाराज मारे आंगणे पधार्या" इस आनंद में विवाहप्रसंग के आनंद को भूल गयी, केवल अब वे महाराजमय बन के रह गयी।

•

अति दयालु स्वभाव है स्वामी का

- भगवती बहन कांतीलाल सोनी (पाटण)

प्रिय भक्तजन ! हम प्रति साम को

गाते है ''अति दयालु स्वभाव छे स्वामी नो'' ऐसा एक प्रसंग अपने सत्संग में हुआ है जिसे हम लिख रही हैं -

एक समय दादा खाचर के दरबार में श्रीजी महाराज विराजमान थे, उसी समय एक सांप वहाँ आ गया, उसे देखकर - बार-बार एक ब्राह्मण बालक वहाँ आता। यह देखकर श्रीजी महाराजने उस बालक को एक थप्पड मारकर वहाँ से भगा दिये और सांप को पकडकर बाहर कर दिये। लेकिन महाराज का हाथ उस ब्राह्मण बालक के मारनें से दुःख रहा था इसलिये महाराज सभा में कहने लगे कि मारने से मेरा हाथ दुखता है तो जो मार खाया है उसका क्या होता होगा ? सभी को आज्ञा किये की उसे खोजकर ले आइये। सभी दौडादडी करने लगे। महाराज नाराज होकर किसी का भोजन नहीं कर रहे थे। ब्राह्मण बालक को जो संत या भक्तजन खोजने गये थे, वे उसे खोजकर ले आये और समझाये कि महाराज कुछ मांगने को कहे तो कहना कि आप किसी का भोजन इस समय नहीं कर रहे हैं तो अब भोजन करियेगा। बालक के पिता ने कहा कि यदि दूसरी बार भी कुछ मांगने को कहे तो महाराज का चरणारविंद मांगना। ऐसा कहक र बालक को महाराज के पास लाया गया। महाराज ने कहा हमने तुझे थप्पड मारा लगा ? बालक ने कहा हाँ महाराज लगा। उसी समय कोई भक्त महाराज की पूजा करके मिस्त्री एवं २ सया भेंट में दिया था, उसे महाराजने बालक को दे दिया। बाद में महाराजने कहा ब्राह्मण कुमार तुम कुछ मांग हम तुम्हें देंगे। ब्राह्मण बालकने कहा महाराज आप किसी का भोजन नहीं कर रहे हैं तो मेरी प्रार्थना है आप सभी का भोजन करें। महाप्रभु साधु की तरफ देखे और रहस्य समझ गये। बाद में भोजन के लिये हाँ कहकर दूसरा कुछ मांगने को कहे, तब ब्राह्मण कुमार ने कहा प्रभु आप अपने चरणारविंद की एक जोड़ी दे दीजिए। महाराज ने उसे मंगाकर दे दिया। महाराज खूब प्रसन्न होकर कहे कि अब दूसरा कुछ मांग तब बालक के पिता ने कहा प्रभु आपने तो सब कुछ देदिया अब बाकी क्या रहा ? बाद में महाराज ने अति प्रसन्न होकर बालक के छाती में अपना चरणारविंद दे दिया और कहा कि तुम्हारा एवं तुम्हारे पिता का हम कल्याण करेंगे। ऐसा कहकर अपने मनकी उदासीनता को दूर किये। धन्य है वह बालक एवं बालक के पिता जिनके ऊपर सर्वोपरि की प्रसन्नता प्राप्त हुई।

•

श्रीहरि का लीला चरित्र

- हंसाबहन शिवप्रसाद भट्ट

सत्संग का कवच हमारी रक्षा कैसे करता है, इसके साथ बालकों में संस्कार सिंचन कैसे करता है - इसकी चर्चा यहाँ करते हैं।

श्री स्वामिनारायण भगवान आज भी प्रत्यक्ष है।

''विश्वास''

पायानी ईंट मां विश्वास छे।
गगन चूमता पक्षियों ने पांख मां विश्वास छे।
उंधी लटकती वाग्गेड़ने, एक वृक्षमां विश्वास छे
वांदरीनी ठेकमां वच्चा ने विश्वास छे।
जडने चेतनमां चेतनने जडमां अन्यो विश्वास छे।
श्रीजी तणा सत्संगमां भक्तोने विश्वास छे।
आचार्यना ''ताज''मां सर्वने विश्वास छे।
श्री घनश्याम तमारा नाममां हंसा रणाने विश्वास छे।
(जीवात्मा)

ऐसा दृढ विश्वास पैदा करने वाले माता पिता को कोटि-कोटि वन्दन। एकबार श्रीजी महाराज अपने संतवृंद के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव चलकर जा रहे थे। संतो के साथ महाराज सत्संग की बात करते जा रहे थे। रास्ते में एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने के लिये सभी स्कना चाहे लेकिन उस वृक्ष के नीचे कोई मलत्याग किया था, जिसमें आगे चलने लगे। थोड़ा दूर गये कि एक कुत्ता खरगोश के बच्चे को पकड़ने के लिये दौड रहा था, इतने में वह खरगोश शावक महाराज के चरणों में आकर छिप गया। महाराज उसे गोंद में उठा लिये, कुत्ता वापस हांफते हुए चला गया। इधर संत आपस में चर्चा करने लगे कि आज महाराज के चरण में आने से एक जीव की रक्षा हुई। दूसरे संत ने कहा किसी का शिकार महाराज ने बचाया। श्रीजी महाराजने कहा आपलोग कैसे निश्चित कर सकते हो ? तब संतोने कहा महाराज आप ही समझाइये।

महाराजने कहा हमें रास्ते में दो अनुभव हुआ। प्रथम यह कि हम थके हुए थे विश्राम करने वृक्ष के नीचे गये लेकिन वहाँ मल त्याग के कारण गन्दगी थी जिससे वहाँ विश्राम नहीं किये। गन्दकी नहीं होती तो हम वही स्कते और संत वहाँ रसोई करते, सत्संग करते, जिससे वृक्ष भी मोक्ष का अधिकारी बनता, परंतु वह लाभ उसे मलत्याग करने वाले ने मिलते नहीं दिया, इसलिये वह सच्चा दुश्मन कहलाता है।

यह कुत्ता मूंगा प्रणी है फिर भी खरगोश का दुश्मन होते हुए भी इस खरगोश कोमेरी शरण में लाया और स्वयं चला गया। यह जीव संत समागम का अधिकारी बना, हमारी शरण मेंआया तो मोक्ष का मार्ग इसका खुल गया। अब आप सब बतायें कि सच्चा हितकारी कौन ? एवं सच्चा दुश्मन कौन ?

संतोने कहा प्रभु ? यथार्थता अब समझ में आगयी। प्रभु ? ध्रुवजीभी सौतेली माता को प्रणाम इसलिये किये कि चतुर्भुज भगवान विष्णु के दर्शन से जिन्हे अविचल ध्रुव स्थान मिला। भगवान रामने भी माता कैकेयी को सर्व प्रथम प्रणाम इसलिये किया कि रावण का वध करके अवातरी कार्य पूर्ण करने का श्रेय माता कैकेयी को था। इसलिये यह बात समझ में आगयी।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में वसंत पंचमी के दिन पर शिक्षापत्री जयंती मनाई गई

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में प्रसादी के अलौकिक सभा मंडप में वक्ता संत शास्त्री छपैयाप्रसाददासजी ने श्री स्वामिनारायण भगवान लिखित संप्रदाय के महान अलौकिक ग्रंथ शिक्षापत्री के वांचन वसंत पंचमी के शुभ दिन पर किया था । बडे संख्या में संत और हरिभक्तों शिक्षापत्रीका पूजन-अर्जन करके पठन किया था ।

- कोठारी धर्मप्रकाशदास

अहमदाबाद मंदिर में श्रीमद् सत्संगीजीवन पारायण

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ दिव्य सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्री तथा अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा बडी गादीवालाश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (छपैया के माजी महंतश्री) तथा महंत स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से पवित्र धनुर्मास में श्रीजी महाराजश्री की प्रसन्नता हेतु ता. ८-१-०७ से १४-१-०७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण प.भ. पुष्पाबहन अम्रुभाई पटेल (वहेलालवाले) (यु.एस.ए.) (प.भ. रमणभाई जेठाभाई पटेल असलालीवाले की पुत्री) के तरफ से स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदसाजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर और सहिंतापाठ शास्त्री स्वामी सत्यस्वरूपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) विराजमान थे । कथा का अलौकिक लाभ लेकर हरिभक्त बहुत ही प्रसन्न हुए ।

पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे थे । यजमान परिवारने पूजन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । उसके बाद महंत स्वामी, शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी आदि संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने संभाला था ।

- ब्र. राजेश्वरानंद, जे.पी. स्वामी

जेतलपुर मंदिर में धनुर्मास धुन

दिव्य अलौकिक महाप्रतापी संकल्प मूर्ति श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दिव्य सांनिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पूज्य महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से और स.गु. महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से पवित्र धनुर्मास में श्रीहरिनाम स्मरण धून एक महिने तक चली थी । जिसमें पाठशाला के संतो के सहित हरिभक्तोनेभी बड़ी संख्यामें धून में भाग और लाभ लिया ।

- पूजारी व्रजवल्लभदास

नारायणघाट मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तीर्थोत्तम पवित्र दिव्य भूमि नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर पर ता. ६-१-०७ के शुभ दिनशाम को ५-०० बजे संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १००८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव का अलौकिक वधार करके मनाया गया । इस प्रसंग पर कथा-वार्ता कीर्तन भक्ति आदि कार्यक्रम संत और हरिक्तों द्वारा हुआ था । पू. लालजी महाराजश्री ने सभा में अलौकिक आशीर्वाद प्रदान किये । स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी और स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से अनेक हरिभक्तों ने विविध सेवा में यजमान बनकर लाभ लिया था । शाकोत्सव का लाभ १५००० जितने भाविकों लेकर धन्य बने थे ।

- पूजारी बालु स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर (सेक्टर-२३) गांधीनगर

हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से.२३) में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से सद्भाव का महोत्सव अद्भुत उत्साह से मनाया गया । इस प्रसंग पर गांधीनगर से अंधजन स्कूल मुकबधिरशाला तथा सिविल होस्पिटल में अल्पाहार, फ्रुट, बिस्कीट का वितरण किया गया था । साथ-साथ विशाल रेली का आयोजन किया गया था । जिसमें ३०० जितने वाहन, सुसोभित टेबल और स्वामिनारायण महामंत्र की धून के साथ हरिभक्तों समग्र शहर में धुमे थे । जनमंगल होमात्मक महापूजा और शाकोत्सव के आयोजन में हरिभक्तों ने विशाल संख्या में लाभ लिया था ।

इस प्रसंग ता. ११-१-०७ के दिन धनुर्मास प्रातः में ६-१५ बजे अमहदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारे तब भावपूर्ण स्वागत किया गया था । पू.महाराजश्री ठाकुरजीकी आरती उतारक सभा में विराजमान हुए थे । शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजीने सभा में कथा-श्रवण करवाया था शास्त्री स्वामी के शिष्य स्वामी हरिप्रियदास और साधु श्रीरंगदासने पू. महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

यजमानश्री पसाभाई एम. पटेल रतनसिंहजी वाघेला, मफतभाई संघवी, शिवाभाई पटेल और लक्ष्मणभाई पटेलने आरती पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए बताया कि कथा वार्ता से ही जीवन मेंअच्छे गुण आते हैं । ऐसी कथा का सुंदर लाभ प्रदान करनेवाले शास्त्री स्वामी हमें मिले है । इसीलिए आप सभी भाग्यशाली हो । जितना अधिक लाभ लिया जाय उनता ही अधिक लाभ लेना चाहिए । यहाँ का शिस्त और व्यवस्तित आयोजन देखकर पू.महाराजश्री बहुत प्रसन्न हुए थे ।

- बाबुभाई जे. पटेल

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में प्रातः धून, एक घंटे कथा-वार्ता और

दैनिक धून में हरिभक्तों ने बड़ी संख्या में लाभ लिया था ।

ता. ७-१-२००७ के शाकोत्सव प्रसंग पर पूजारी स्वामी भक्तिनंदनदासने श्री घनश्याम महाराज का शाकोत्सव श्रृंगार के दर्शन करवाये थे ।

शाकोत्सव के यजमानपद पर प.भ. लाडुबहन हरजीभाई माणीया के परिवारने लाभ लिया था । हरिभक्तोंने विशाल संख्या में शाकोत्सव का प्रसंग मनाया था ।

- गोरधनभाी सीतापरा

ईडर प्रदेशमें धून-शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और ईडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ मंदिर में धनुर्मास में प्रात: धून में अनेक हरिभक्तोने लाभ लिया था ।

ता. ७-१-०७ कते उमेदगढ गाँव में सुंदर शाकोत्सव मनाया गया । उसी दिन अरोडा में भी शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । दोनों स्थानो पर ईडर के महंत स्वामी, महुन्द्रा के स्वामी तथा हिंमतनगर के संतोने कथा-वार्ता का लाभ प्रदान किया था । बहन और भाईओं की सेवा प्रेरणा स्त्र थी ।

- कोठारी सत्यसंकल्पदास

धनुर्मास में नारणपुरा मंदिर से कालुपुर मंदिर पदयात्रा

अहमदाबाद के पोश विस्तार नारणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर से धनुर्मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से हजारों की संख्या में भाविक भक्तों के साथ ता. ७-१-०७ के दिन नारणपुरा श्री घनश्याम महाराज के दर्शन करके अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दर्शन के हेतु विशाल पदायात्रा का आयोजन किया गया था । *- घनश्यामभाई पटेल*

घाटलोडिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री नरनारायणदेव ताबा के नवनिर्मित पूर्ण हो रहे घाटलोडीया श्री स्वामिनरायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हरिभक्तों के साथ मिलकर सत्संग का विशेष पोषण प्राप्त हो ऐसी सुंदर प्रवृत्ति कर रहे हैं । धनुर्मास में नित्य प्रात: श्रीहरि नाम स्मरण धून-कथा-वार्ता होती थी । शा. स्वामी प्रेमस्वरूपदासजीने पधारकर कथा का सुंदर लाभ प्रदान किया था । धनुर्मास में सेंकडो हरिभक्तोंने धून में यजमान बनकर लाभ लिया था ।

ता. २२-२-०७ से २६-६-०७ तक मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में धूमधाम से संपन्न होगा । मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग में अनेक भक्तजनों ने सेवा लिखवाकर धन्य बने गये ।

- प्रविणभाई टी. पटेल

हर्षद कोलोनी श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा प.भ. दासभाई और श्रीवाडीभाई की प्रेरणा से धनुर्मास में धून और कथावार्ता का आयोजन किया गया था ।

ता. ३१-१२-०७ के दिन प्रात: ९ से दोपहर के १२ बजे तक महामंत्र धून हुई थी ।

धून की पूर्णाहुति के प्रसंग पर एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी, श्रीजी स्वामी और संत स्वामी (जोम सोम-पोखरा के महंत) आदि संतोने पाधरकर कथा-वार्ता का लाभ प्रदान किया था ।

- गोरधनभाई सीतापरा

कालीयाणा (विरमगाम) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पूज्य पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा से हरिभक्तोंने बहुत रस लेकर सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति कर रहे हैं । पोष वद-१२ को प.भ. नारणभाई परमाभाई तथा प.भ. रामाभाई की तरफ से श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया था । गाँव के सभी भक्तजन धून का लाभ लेकर धन्य हो गये थे ।

- डाह्याभाई बुटीया

विरमगाँव श्री स्वामिनरायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ११-१२-०६ के दिन प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया । हजारों श्रद्धालु भाविकोने शाकोत्सव को मनाया और दर्शन प्रसाद प्राप्त करके भाग्यशाली बन गये ।

बहनो के मंदिर में ' श्री भक्त चिंतामणी ' पंचान्ह पारायण की पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. बडी गादीवाला श्रीने पधारकर दर्शन-आशीर्वाद का लाभ प्रदान किया था ।

- अवनी एन. ठक्कर

नारायणपुरा (कडी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वाद आज्ञा से प.भ. कांतिभाई नथुदास पटेल की तरफ से उनकी मातुश्री अ.नि. मणीबा के स्मरण हेतु श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घंटे की धून का आयोजन किया गया था । जिसमें आस-पास के गांव और खाखरिया विस्तार के हरिभक्तोंने धूनका लाभ लिया था । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर यजमान परिवार और सभी हरिभक्तों को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया । हिंमतनगर के महंत स्वामी शा. आनंदजीवनदासजीने मार्गदर्शन प्रदान किया था । *- पूजारी धर्मकिशोरदास*

नलकांठा के शियाल गाँवमें प.पू. आचार्य महाराजश्री की पदार्पण

नलकांठा के बावका तालुका के छोटे विस्तार के शियाल गाँव में ता. १२-१-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे संत और ग्रामजनो का भावपूर्वक स्वागत किया था । मंदिर में प.पू. महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे । प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने कहा की यहाँ जो भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य चरणारविंद है उसमें १६ चिन्हों के आज स्पष्ट दर्शन हो रहे है ।

स्वामिनारायण भगवान एकबार बकोल से शियाल पधारे तब यहाँ के तालाब के किनारे पर जो सभी का वृक्ष है उस पर चढ़कर तालाब में कूदकर स्नान किया था ।

और तब श्रीहरिने कहा था कि खिजड़ा ही मेरी माणकी घोड़ी है। इस दिव्य प्रसादी के स्थल पर छत्री बनवाकर चरणारविंद स्थापित किये है । गाँव में रत्ना भगत (कुंभार) के वहाँ रात्रि में महाराज ने उतारा किया था । बहुत प्रसन्न होकर भगवानने उनके संकल्प से खेस के पकडे पर कुंमकुम के चरणारविंद लगाकर दिये। जिसे उन्होंने अपने जीवन पर्यन्त तक पूजा में रखकर सेवा कीथी । जो अभी मंदिर में पूजा में हयात है। प्रसादी का घर कुंभार कानजीभाई रामाभाई का था ।

एक समय रत्ना भगत खेत में मजदूरी करते थे। तब राजा के लिये पानी लेने हेतु वे घर में पानी की मटकी लेने आये थे। तबउनके वहाँ संत पधारे थे । इस कारण बहुत ही भावप्रेम से संतो की सेवा में व्यस्त हो गये। एक तरफ राजा की सेवा का हुकम होने के कारण धर्म संकट आया। तालाब में विरडी का पानी भरकर राजा के स्थान पर पहुँचे वहाँ आश्चर्य के साथ राजाने भगत के मस्तक पर उनको मजदूरी में से मुक्त कर दिया ।

दूसरी बार श्रीहरि वहाँ पधारे (उनका दूसरा अवतार वणिक माधव शेठ के नाम से) वहाँ५०० परमहंसो के साथ सभा करके उन्हें प्रसन्न कर दिया। शेठने भाव में आकर हलुआ में शक्कर की जगह नमक डाल दिया। जिसे भगवान खा गये । यहाँ पत्थर पर शिलालेख है, वही पर चरणारविंद प्रसाद का है वहाँ महिलाओं का मंदिर भी है।

ता. १४-१-०७ उत्तरायण के दिन पू. पी.पी. स्वामी ने संत मंडल के साथ शाकोत्सव किया। साथ में श्री चिमनभाई पटेल भी लाभ लिये । पू. पी.पी. स्वामी उत्सव की महिमा समझाई ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिरमें ठाकुरजी की आरती उतारकर भक्तों के घर पदार्पण करके घर को तीर्थ बनादिये। सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये ।

- साधु भक्तिनन्दनदास

प्रभु हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कीआज्ञा से जमीयतपुरा श्री प्रभु हनुमानजी पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २३-१२-०६ से २५-१२-०६ तक श्रीमद् सत्संगीजीवन पारायण को घनश्याम स्वामीने किया । इस प्रसंग पर श्री मास्ति यज्ञ का भी आयोजन किया गया था। ता. २५-१२-०६ को दिव्य शाकोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था । इस प्रसंग पर दिव्य दर्शन का लाभ लेकर भक्तजन आनंदित हुए थे।- *साधु भक्तिकेशवदास*

मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि के प्रसादी वाले मोटेरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री की आज्ञा से १८-१२-०६ से ७-१-०७ तक श्रीमद् भागवत पारायण एवं शाकोत्सव का आयोजन किया गया था ।

शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने सुन्दर मधुर कंठ से कथामृत का रसपान करवाया । जिसके यजमान श्री शंकरभाई फुलाभाई पटेल परिवार थे । जिसमें श्री नरनारायण युवक मंडल सेवा में अग्रसर था । बहनों को दर्शन का लाभ देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी। इस का आयोजन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था ।

- श्री न.ना.देव युवक मंडल

घमासणा गाँव में शाकोत्सव

घमासणा श्री स्वामिनारायणमंदिर में ता. ६-१-०७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव मनाया गया। इस सभा में पूज्य महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया कि इस गाँव के भक्तोंने श्री नरनारायणदेव की निष्ठा को छोड़ा नहीं है। इस गाँव का यही गौरव है कि यहाँदूसरे पन्थ को घुसने नहीं दिया । इस प्रसंग पर स्वा. हरिकृष्णदासजीने स.गु. गुस्प्रसाददासजीने स्वा. रामकृष्णदासने स्वा. राजेश्वरानंदजीने कथा वार्ता का लाभ दिया। स्वा. पूर्णप्रकाशने सभा संचालन किया ।

- स्वा. जे.पी. गुरुहरिकृष्णदासजी

नवा वाडज

श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के मंदिर में ७-१-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने स्वयंशाकोत्सव करके अलौकिक लाभ दिया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में कहा कि श्रीजी महाराज ने लोया में जो शाकोत्सव किया था उसकी दिव्यगंध से प्रेरित होकर देवता भी आकाश मार्ग से धरती पर उतर आये थे । जिस परमात्मा का दर्शन देवताओं को भी दुर्लभ हैं, वह दर्शन भक्तों को सरल हो गया है। इस प्रकार का सुन्दर आशीर्वाद दिया ।

शाकोत्सव के यजमान श्री वालजीभाई धरमशीभाई गांगाणी परिवार तथा कृष्णा मेडिकल स्टोर्स एवं राधे मेडिकल स्टोर्स वालों ने विशेष लाभ लिया था ।

- शंभुभाई पटेल

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में आबालवृद्ध नर नारी प्रातः काल सुरम्यवातावरणमें धुनि का एवं महामंत्र की अनहदनादका अचूक लाभ दियेथे। शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासने प्रातः विदुरनीति एवं सायंकाल भागवत कथामृत कापान कराया। ता. ३१-१२-०६ रविवार को भव्य शाकोत्सव किया गया । बोपल मंदिर से अहमदाबाद मंदिर तक श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने के लिये पदयात्रा का आयोजन किया गया था ।

प्रति एकादशी को श्री नरनारायण युवक मंडल द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । भक्ति महिला मंडल दोपहर में ३ से पांच बजे तक धुनि कीर्तन कथा का आयोजन किया । प्रति रविवार शाम को ५-३० से ७-३० तक सत्संग सभा का आयोजन होता है। जिस में विद्वान संत कथा वार्ता का लाभ देते हैं।

प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल श्री को. अमृतभाई टी. पटेल आदि अग्रगण्य हरिभक्तों की उपस्थिति में धनुर्मास एवं शाकोत्सव सम्पन्न हुआ। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से प्रत्येक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न होता है । हरिभक्त भी बडी संख्या में उपस्थित होते हैं ।

- प्रविणचंद्र उपाध्याय

चिलोडा (जीतबाका)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चिलोडा मंदिर में धनुर्मास पर्यन्त प्रातः काल महामंत्र धुनि १ घंटे तक चलती थी। अहमदाबाद में रहनेवाले सभी भक्तजन धनुर्मास धुनि का लाभ लेने प्रातः काल उपस्थित रहते थे । स.गु. महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ पधारकर यहाँ गाँव वासियोंको सत्संग का दिव्य लाभ दिये । *- जयंतीभाई पटेल*

नवा वणझार (सस्खेज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में ता. २४-१२-६ को शाकोत्सव का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर स्वा. स्वयंप्रकाशदासने कथावार्ता का लाभ दिया। शाकोत्सव के यजमानश्री राजुभाई ठक्कर, श्री प्रकाशभाई ठक्कर, श्री नीतिनभाई आदि हरिभक्त थे। हरिभक्तों को शाकोत्सव के दर्शन का दिव्य लाभ मिला। *- को. रमणभाई*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूल मंदिर में धनुर्मास धुनि महोत्सव

सर्वोपरि तीर्थधाम स.गु. ब्रह्मानदं स्वामी केमूली धाम में सर्वोपरि श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सांनिध्यमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से धनुर्मास में १६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक ब्रह्मानंद सभा मंडप में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि का भव्य आयोजन किया गया था। जिसमें प्रातः काल संत भक्तजन पधारकर धुनि एवं कीर्तन करते थे। प्रतिदिन नये नये प्रसाद का वितरण किया जाता था । स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी एवं जे.पी. स्वामीने सुन्दर व्यवस्था की थी । सभा संचालन भरत भगतने किया। ७०० जितने संत-भक्त धुनि का लाभ लिये थे।- *नवलदानभाई गढवी*

मूली मंदिर में वसंत पंचमी का उत्सव

सर्वोपरि तीर्थधाम झालावाड हालार देश के हृदय समान मूली श्री स्वामिनारायणमंदिर में सर्वोपरि श्री राधाकृष्णदेव के सांनिध्यमें एवं श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में वसंत पंचमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में प.पू. महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव महाभिषेक षोडशोपचार विधिसे किया गया। प्रसंगका दिव्य दर्शन लाभ करीब २०००० भक्तों ने लिया। सभा में महंत स्वामी के मार्गदर्शन में शा.स्वामी रामकृष्णदसाजी, भक्तिकेशवदासजी, पूर्ण प्रकाशदासजी आदि विद्वान संतोने एवं हरि भक्तोंने झालावाड मूली देश के हरिभक्तों को शुद्ध एवं यथार्थ ज्ञान का अनुपम लाभ तीन दिन तक चलता रहा। हजारों मुमुक्षुओं की सभा में श्रीहरि के अपर स्वरूपों ने एसा हार्दिक आशीर्वाद दिया की जीव की जैसे ऊर्ध्वगति हो गयी हो। आज के दिन हरिभक्तों की अधिक संख्या थी वह इसलिये कि पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री दोनों ने रंगोत्सव वसन्तोत्सव में भक्तों को रंग डाल कर भीज डाला था, जिसकारणसभी अपने को मोक्षभागी अनुभव करने लगे थे। यह उत्सव अलौकिक था। मंदिर के कोठारी जे.पी. स्वामी तथा संतमंडल ने व्यवस्था उत्तम की थी ।

- भरत भगत

वाली (राज.) मंदिर में महामंत्र धुनि

यहाँ राजस्थान वाली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव के शुभ सानिध्य में पोष वद-११ को वाली और आस-पास के ग्रामजनोने बालीया के स्वामीघनश्यामजीवनदासजी के स्मरण हेतु ४ घंटे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की थी। स्वामी हरिप्रसाददासजी और स्वामी विजयप्रकाशदाजी ने सुंदर आयोजन किया था।

वाली मंदिर का नया
फोन : (०२९६९) २९११३८

धांगधा

संस्कार धाम गुरुकुल में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. ३१-१२-०६ के भव्य शाकोत्सव मनाया गया। हजारो भक्तोने भाग लिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने विदेश से फोन द्वारा सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे। स्वामी रामकृष्णदासजी और संत मंडलने कथा-वार्ता का सुंदर लाभ प्रदान किया। *- अनिलभाई दूधरेजीया*

हळवद मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से ता. १०-१-०७ के भव्य शाकोत्सव और त्रैमासिक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर स.गु. भक्तिहरि स्वामी और कोठारी कृष्णवल्लभ स्वामीने सभी हरिभक्तों को कथा-वार्ता का लाभ प्रदान किया था। समग्र आयोजन श्रीजीस्वरूप स्वामीने किया था। *- रमेश तारबुंदिया*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया (U.S.A.)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। प.पू. बडे महाराजश्री एवं गादीवाला श्री मंदिर में दर्शन हेतु पधारे। मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद सर्व प्रथम यहाँ पधारे थे। I.S.S.O. के प्रत्येक चेप्टर से बहने दर्शनार्थे आयी हुई थी । विशाल सत्संग सभा में बडी गादी वालाश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त की थी। पूज्या बडी गादीवालाश्री सभी बहनों से कुशल क्षेम पूछकर प्रतिदिन मंदिर दर्शनार्थ आने के लिए आज्ञा की थी । "अपनी सेवा संस्था द्वारा मेडिकल की सेवा

करनेवाली बहनों का सम्मान करके आशीर्वाद दी थी । भाईयों की सभा में महंत स्वामी सुन्दर प्रवचन करके श्रीहरि की महिमा का गुणगान किया था। सेवा करनेवाले भक्तों का अभिवादन भक्तिकिशोर स्वामीने किया था ।

नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में सत्संग सभा का आयोजन स्वा. सत्यप्रकाशदासजीने किया था । सभा में सुंदर दृष्टान्त दिये थे। महीने का अंतिम दिन होने से सीनियर सीटीजन भाई प्रथम वार मंदिर में दर्शनार्थे आये जिससे अलौकिता का अनुभव हुआ । यजमान परिवार एवं अग्रगण्यों का सन्मान किया गया । भक्ति स्वामीने ठाकुरजीका सुंदर श्रृंगार करके दर्शन का लाभ दिया । पू. महाराजश्रीकी कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है । *- प्रवीणभाई शाह*

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलीया चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से सीडनी मंदिर में सत्संग सभा का आयोजन अधिनिर्दिष्ट हरिभक्तों द्वारा किया गया था । ता. ५-११-०६ को श्री अरनव जोषी ता. १२-११-०६ के दिन मंदिर में सर्व प्रथम तुलसी विवाह का आयोजन श्री खिमजीभाई वाघजीभाई तथा श्री तुषारभाई भट्ट की तरफ से किया गया था । ता. २५-११-०६ को श्री सुनीलभाई दरजी तथा श्री परेशभाई जुट्टाणी । ता. ३-१२-०६ को श्री अंजलेशभाई ने शिक्षापत्री तथा वचनामृत का वांचन किया था । वेही इस सभा में यमज़ानश्री थे । ता. १०-१२-०६ को श्री विशालभाई पटेल, ता. १७-१२-०६ को श्री अमितभाई क्षत्रिय की तरफ से वार्षिकोत्सव मनाया गया था। श्रीहरिकृष्ण महाराज का विधिवत अभिषेक का लाभ सभी को मिला । श्री अमृतदादाने पाटोत्सव का माहात्म्य समझाया । सभा में हरिभक्तों ने नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन का गान किया । पाटोत्सव के यजमान श्री सचिनभाई पटेल थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । *(तेजस पटेल)*

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से २४-१२-०६ शनिवार सायंकाल २। बजे सत्संग सभा में शास्त्र पठन-कीर्तन-नित्य नियम आरती सभी भक्तों ने मिलकर किया । *-कनुभाई पटेल*

पूर्व आफ्रिका सत्संग स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीपूर्व आफ्रिका सत्संग स्वमिनारायण मंदिर की वार्षिक सभा ता. २५-११-०६ को सम्पन्न हुई ।

अध्यक्षश्री लक्ष्मणभाई भीमजीभाई के निर्देश से मंदिर की प्रवृत्ति के विषय में कार्यवाहक कमेटी का सर्वानुमते चयन किया गया था । सत्संगी सत्संग की सुन्दर प्रवृत्ति करते है ।

- भोरवालाल वेलजी गोरसिया

एन्ड्रोला झांबिया सत्संग मंडल

श्रीजी महाराज की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से मंदिर में भगवान के समक्ष नूतन वर्ष का अन्नकूटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

श्री प्रफुल्लभाई, श्रीकीरीटभाई पारेख एवं श्री रमणभाई की सेवा अग्रसर रही ।

सभा में "अपने महाराजश्री" की सीडी सुनकर पू. बडे महाराजश्री का एक-एक शब्द जीवन में उतारने के योग्य था । विशेष तो यह कि "हंमेशा श्रीहरि की उपस्थिति का अनुभव करने से सभी दुःख दूर होते हैं । कैसी अद्‌भुत लीला बडे महाराजश्री की है । सभी दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे । अन्नकूट में १०० जितने व्यंजन ठाकुरजी के समक्ष रखे गये थे । प्रति शनिवार एवं एकादशी को सभा का आयोजन होता है । अपने सभी उत्सव हरिभक्त बड़े उत्साह के साथ मनाते है ।

- जयेश आर. पटेल

सूचना

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोंगधा नरसिंह टेकरी पर रहने वाले साधु घनश्यामप्रकाशदास तथा साधु देवकिशोरदासने साधुका वस्त्र उतारकर संप्रदाय छोड़कर चले गये है, यह सभी लोग जानलें । *- आज्ञासे*

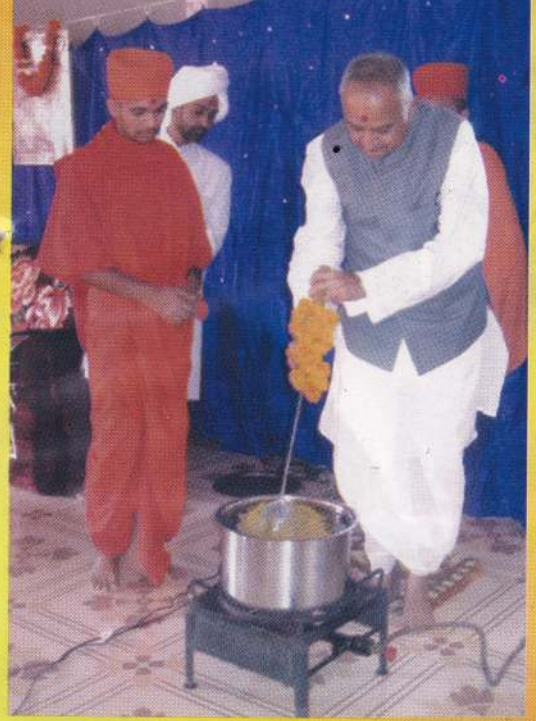
अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

बीलीया (ता. सिध्धपुर) : अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत स.गु. महंत स्वा. घनश्यामजीवनदासजी गुरु स.गु. स्वामी नारायणप्रियदासजी ता. १०-१-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है । जिसके अक्षरनिवास से सिद्धपुर प्रदेश, मारवाड प्रदेश, एवं उत्तर गुजरात के गाँवो में बडी कमी हुई है । श्रीहरि उन्हें अपनी सेवा में रखें ऐसी प्रार्थना ।

हिंमतनगर : श्री रामभाई कोदरभाई (बेरणावाला) ता. ७-१-०७ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

मेघाणीनगर : श्री सोमाभाई भाईचन्ददास मोदी ता. २५-१२-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव का कीर्तन गाने वाले सोनी श्री हरीशभाई, श्री देवेन्द्रभाई एवं पनुभाई की माताजी गं.स्व. कपीलाबहन चिमनलाल सोनी उम्र ९० वर्ष श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई है ।



विरमगाँव मंदिर में शाकोत्सव करते हुए
प.पू. बडे महाराजश्री ।



गांधीनगर(सेक्टर-२३) मंदिर में विराजमान प.पू. महाराजश्री
का दर्शन करते हुए शा.स्वा. हरिकेशवदासजी ।



धनुर्मास में नारायणपुरा मंदिर से कालुपुर मंदिर पदयात्रा
में संत हरिभक्त ।



घमासणा में शाकोत्सव करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



नारायणघाट मंदिर में शाकोत्सव करते हुए
प.पू. लालजी महाराजश्री ।



शियाण गाँव में शाकोत्सव ।



बोपल मंदिर में शाकोत्सव के प्रसंग पर बडी संख्या में हरिभक्त
लाभ लिये थे ।